विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 12 अंक : 47 सितंबर, 2019

विश्व भर में हिंदी दिवस 2019 का आयोजन

इस वर्ष भी परम्परागत रूप से भारत तथा मॉरीशस के साथ-साथ विश्व के अनेक देशों में हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। विश्व भर में हिंदी दिवस के आयोजन की झलकियाँ विश्व हिंदी समाचार के इस अंक में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही हैं।

पृ. 2-5

विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गांधी संस्थान द्वारा आयोजित चार दिवसीय कार्यशाला : 'हिंदी में सृजनात्मक लेखन'

23 जुलाई से 26 जुलाई 2019 तक विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गांधी संस्थान द्वारा सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में चार दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय ***'हिंदी में सृजनात्मक लेखन'*** रहा।

पृ. 5-7

गुरुग्राम में राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला

22 अगस्त, 2019 को विश्व नागरी विज्ञान संस्थान, गुरुग्राम और केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में के.आई.आई.टी. वर्ल्ड ऑव एजुकेशन के प्रांगण में 'देवनागरी लिपि, वर्तनी और हिंदी भाषा की संरचना : समस्याएँ और चुनौतियाँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला का आयोजन किया गया।

पृ. 8

'हिंची' पत्रिका का लोकार्पण

14 अगस्त, 2019 को केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली में 'हिंची' पत्रिका का लोकार्पण किया गया। '

पृ.13

लंदन में श्री इंद्रजीत शर्मा और डॉ. ओम प्रकाश गट्टाणी को 'भारत गौरव सम्मान'

19 जुलाई, 2019 को ब्रिटिश पार्लियामेंट, लंदन के हाउस ऑफ़ कॉमंस के सभागार में भारत के सुप्रसिद्ध समाजसेवी इंद्रजीत शर्मा और डॉ. ओम प्रकाश गट्टाणी को 'भारत गौरव सम्मान' से अलंकृत किया गया।

पृ. 13

श्रद्धांजलि
माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज

6 अगस्त 2019 को भारत की पूर्व विदेश मंत्री और भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज का निधन हो गया। 7 अगस्त 2019 को शाम चार बजे दिल्ली में उनका अंतिम संस्कार किया गया। श्रीमती स्वराज विदेश मंत्री के रूप में विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् की सहअध्यक्षा रह चुकी हैं।

श्रीमती सत्यवती सीता रामयाद

11 सितंबर 2019, को प्रसिद्ध हिंदी लेखिका एवं अध्यापिका श्रीमती सत्यवती सीता रामयाद का निधन हो गया। मॉरीशस के हिंदी समुदाय के बीच आप कवयित्री व अभिनेत्री के रूप में पहचानी जाती हैं।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मेलन / अधिवेशन / परिसंवाद / उत्सव / समारोह / जयंती — पृ. 7-11

लोकार्पण — पृ. 12-13
पुरस्कार / सम्मान — पृ. 13-14
श्रद्धांजलि — पृ. 15
संपादकीय — पृ. 16

ISSN 1694-2485

हिंदी दिवस 2019

भारत

विज्ञान भवन, नई दिल्ली

14 सितंबर, 2019 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में हिंदी दिवस 2019 मनाया गया। इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री माननीय श्री अमित शाह ने 'ई-सरल हिंदी वाक्य कोश तथा ई-महा शब्दकोश मोबाइल ऐप' का विमोचन किया, जिसका उद्देश्य हिंदी के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग को सक्षम बनाना है। उन्होंने हिंदी के प्रति योगदान हेतु सरकारी विभागों तथा सार्वजनिक क्षेत्र इकाइयों को क्रमशः 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' तथा 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' प्रदान किए। माननीय श्री शाह ने भारत को एकजुट करनेवाले कारक के रूप में हिंदी को सर्वोपरि बताया।

साभार : कमल संदेश.ऑर्ग

लखनऊ

10 सितंबर, 2019 को जवाहर नवोदय विद्यालय, पिपरसंड, लखनऊ में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में राजभाषा हिंदी पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि साहित्यकार, ब्लॉगर व डाक सेवाओं के निदेशक श्री कृष्ण कुमार यादव रहे। उन्होंने कहा कि हिंदी में विश्व भाषा बनने की क्षमता है। हिंदी आज सिर्फ़ साहित्य और बोलचाल की ही भाषा नहीं, बल्कि विज्ञान-प्रौद्योगिकी से लेकर संचार-क्रांति और सूचना-प्रौद्योगिकी से लेकर व्यापार की भाषा भी बनने की ओर अग्रसर है। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों द्वारा साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ एवं कविता-वाचन हुआ तथा विद्यालय की हस्तलिखित पत्रिका 'कोशिशें' का विमोचन भी किया गया। समारोह में कई अध्यापकगण व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

श्री कृष्ण कुमार यादव की रिपोर्ट

शिमला

13 सितंबर, 2019 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह का प्रारंभ दीप-प्रज्वलन से हुआ। संस्थान के हिंदी अनुवादक श्री राजेश कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया। संस्थान के जनसंपर्क अधिकारी श्री अखिलेश पाठक ने मानव संसाधन विकास मंत्री माननीय डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी का संदेश पढ़कर सुनाया। संस्थान के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर कपिल कपूर ने अपने संबोधन में कहा कि जिस प्रकार जल और वायु हमारे लिए आवश्यक हैं, उसी प्रकार भाषा का भी हमारे जीवन में महत्त्व है। हिंदी हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्येता प्रोफ़ेसर रमेश चन्द्र प्रधान, राष्ट्रीय अध्येता प्रोफ़ेसर एम.पी. सिंह, राष्ट्रीय अध्येता प्रोफ़ेसर मेघा देशपाण्डे, राष्ट्रीय अध्येता प्रोफ़ेसर दाता राम पुरोहित, प्रोफ़ेसर शरद देशपाण्डे, अध्येता डॉ. सत्येन्द्र कुमार, अध्येता प्रोफ़ेसर हितेन्द्र पटेल, अध्येता डॉ. अभिषेक कुमार यादव तथा संस्थान के सचिव कर्नल डॉ. विजय तिवारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. मनीषा चौधरी तथा डॉ. रमाशंकर सिंह द्वारा संपादित संस्थान की अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'हिमांजलि' के 18वें अंक का लोकार्पण भी किया गया। समारोह में प्रसिद्ध शिक्षाविद, भाषा शास्त्री तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे। मंच-संचालन हिंदी अनुवादक श्री राजेश कुमार ने किया।

साभार : श्री राजेश कुमार की रिपोर्ट

गुरुग्राम

9 से 13 सितंबर, 2019 को मानव रचना इंटरनेशनल स्कूल सेक्टर 51, गुरुग्राम में 'हिंदी दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी से संबंधित विभिन्न क्रियाकलाप टोडलर से पांचवीं तक के छात्रों ने किए। टोडलर व नर्सरी के छात्रों ने हिंदी में दी गई हिदायतों को समझकर योग किया, 'आओ झूमें गाए' नृत्य किया व कहानी सुनाना आदि गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं। के.जी. के छात्र-छात्राओं ने भी शब्द योग, कविता-वाचन व नैतिक मूल्यों पर आधारित बातें सीखीं। कक्षा पहली से पाँचवी तक के बच्चों को भाषा के महत्त्व पर कहानियों की वीडियो दिखाई गई। बच्चों को हास्य कविता-वाचन, दोहे, नारे लिखना, अनुच्छेद-लेखन व शब्दावली आदि की गतिविधियाँ करवाई गईं।

हिंदी दिवस के अवसर पर 13 सितम्बर के दिन हिंदी उल्लास पर्व मनाया गया। कक्षा टोडलर के बच्चों ने हिंदी में गाना गाकर अपने विचार व्यक्त किए। नर्सरी के बच्चों ने 'एक हाथी आया झूमकर' गाना गाया। कक्षा के.जी. के बच्चों ने 'तन हो सुंदर मन हो सुंदर' सामूहिक कविता वाचन किया। कक्षा दूसरी के बच्चों ने गायत्री मंत्र का पाठ किया। कक्षा चौथी के बच्चों ने श्लोक प्रस्तुत करके हिंदी में समाचार सुनाया। कक्षा पाँचवी के एक छात्र ने हिंदी साहित्य का इतिहास सुनाकर भाषा के उत्थान के विभिन्न चरणों को बताया। सभी कक्षाओं के छात्र-छात्राओं में अंतर समूह प्रतियोगिताएँ हुईं, जिनमें सभी बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कक्षा चौथी के बच्चों ने हिंदी भाषा के महत्त्व को समझाते हुए मनमोहक नृत्य किया। कक्षा पाँचवी के छात्र-छात्राओं ने पर्यावरण रक्षा हेतु एक नाटक प्रस्तुत किया। अंत में प्रधानाचार्या जी ने बच्चों को हिंदी भाषा के महत्त्व के बारे में बताते हुए भाषा प्रयोग के प्रति प्रोत्साहित किया व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दीं। इस दौरान बच्चों ने अनुशासन बनाए रखा तथा कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

साभार : मानव रचना इंटरनेशनल स्कूल का वेबसाइट

हिंदी पखवाड़ा-2019 का उद्घाटन एवं हिंदी दिवस समारोह का आयोजन

16 सितंबर, 2019 को राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में हिंदी पखवाड़ा-2019 का उद्घाटन एवं हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता की एवं सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। हिंदी दिवस समारोह में मंचासीन डॉ. हिमांशु पाठक, डॉ. जी.ए.के. कुमार, प्रभागाध्यक्ष, समाजविज्ञान प्रभाग एवं अध्यक्ष, हिंदी पखवाड़ा आयोजन समिति के उपाध्यक्ष तथा श्री बसंत साहु, कार्यालय अध्यक्ष ने सभा में उपस्थित सदस्यों को हिंदी भाषा के महत्त्व, हिंदी दिवस का इतिहास और वर्तमान सूचना-क्रांति की दौर में देश-विदेश में इसकी बढ़ती लोकप्रियता के संदर्भ में अपने-अपने विचार सभा में प्रस्तुत किए। पखवाड़े का शुभारंभ 16 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह के आयोजन के साथ हुआ और हिंदी दिवस समारोह की समाप्ति के बाद हिंदीतर एवं हिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए श्रुत लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस समारोह में संस्थान के विभिन्न प्रभागों एवं अनुभागों के अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी तथा प्रशासनिक कर्मचारी उपस्थित थे। हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन एवं हिंदी दिवस समारोह का मंच-संचालन एवं समन्वयन फसल उत्पादन प्रभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राहुल त्रिपाठी द्वारा किया गया।

साभार : भाकृअनुप-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक का वेबसाइट

विश्व भर में

कैलिफ़ोर्निया

15 सितंबर, 2019 को भारतीय कौंसलावास सैन फ़्रांसिस्को द्वारा मिल्पिटस कैलिफ़ोर्निया के जैन पाठशाला में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ दीप-प्रज्वलन से हुआ। प्रो. नीलू गुप्त ने स्वागत भाषण तथा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अन्तर्गत बे एरिया स्थित हिंदी सेवी संस्था 'विश्व हिंदी ज्योति' तथा उपमा की संस्थापिका प्रो. नीलू गुप्त व समूह द्वारा एक सुंदर रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, कविताएँ व नृत्य की प्रस्तुति तथा लघु-नाटिकाओं का मंचन किया गया। दर्शकों से भरे सभागार में लगभग 3 घंटे तक चले इस कार्यक्रम में हिंदी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए, विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में सम्मिलित व भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने की आवश्यकता पर श्री संजय पांडा व विदेश में हिंदी का परचम फहराने वाली हिंदी की प्रो. नीलू गुप्त द्वारा बल दिया गया।

साभार : नीलू गुप्त की रिपोर्ट

सरी, कनाडा

29 सितंबर, 2019 को सरी, कनाडा में भारतीय दूतावास तथा कनाडा के हिंदी साहित्यिक समाज के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में लोक महोत्सव का आयोजन किया गया। कौंसिल श्री एच. वेंकटचलम् ने भारतीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का संदेश पढ़ा तथा हिंदी भाषा के संरक्षण तथा प्रसार में उपस्थित सभी के समर्थन हेतु धन्यवाद दिया। कनाडा के हिंदी साहित्यिक समाज के अध्यक्ष, डॉ. अजय गर्ग ने संस्था की गतिविधियों पर बात की। इस अवसर पर आयोजित हिंदी लेख तथा हिंदी सस्वर पाठ प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। समारोह के दौरान हिंदी भाषा तथा संस्कृति को उजागर करने हेतु भाषण, लोक संगीत, लोक नृत्य का भी आयोजन किया गया तथा लघु नाटक का मंचन किया गया।

साभार : भारतीय दूतावास, वैंकूवर, कनाडा का फ़ेसबुक पृष्ठ

फ़्रैंकफ़र्ट, जर्मनी

17 सितंबर, 2019 को फ़्रैंकफ़र्ट, जर्मनी में भारत के महावाणिज्य दूतावास में हिंदी दिवस मनाया गया। महावाणिज्य दूत प्रतिभा पारकर ने अतिथियों को संबोधित किया और हिंदी के महत्त्व पर बात की। जर्मनी में हिंदी-शिक्षण की स्थिति पर यूनिवर्सिटी ऑफ़ माइंत्स में इंडोलॉजी डिपार्टमेंट की प्रमुख प्रो. डॉ. अल्मुथ डेग्नर द्वारा मुख्य भाषण दिया गया। महात्मा गांधी पर आयोजित निबंध और कविता प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया गया। कविता प्रतियोगिता के विजेताओं और प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। हिंदी पर एक लघु फ़िल्म भी दिखाई गई।

साभार : भारतीय कौंसुलावास, फ़्रैंकफ़र्ट का फ़ेसबुक पृष्ठ

नायरोबी, केन्या

14 सितंबर, 2019 को केन भारती संस्थान, तथा भारतीय उच्चायोग, केन्या के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायोग में डिफ़ेंस एडवाइज़र कैप्टन (नेवी) श्री नितेश गर्ग रहे। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि हिंदी न केवल भारतीयों की भाषा है, बल्कि यू.ए.ई. जैसे कई देशों को जोड़नेवाली भाषा है।

केन भारती संस्थान के अध्यक्ष श्री अभिजीत गुप्त ने कहा कि हम पिछले कई सालों से केन्या में हिंदी दिवस मना रहे हैं और हर साल इसे निर्धारित रूप से मनाएँगे। समारोह के दौरान कई कवियों ने प्रसिद्ध कविताओं एवं स्वरचित कविताओं का पाठ किया तथा बच्चों ने 'हिंदी की कक्षा' प्रहसन भी प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री अभिजीत गुप्त ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन नमरत व्यास ने किया।

साभार : केन भारती संस्थान की रिपोर्ट

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

14 सितंबर, 2019 को सिडनी के भारतीय कौंसलावास में इंडियन काउंसलेट, संस्था इलासा (इंडियन लिटरेरी एंड आर्ट सोसायटी ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया, सिडनी) और भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया के सौजन्य से महात्मा गांधी जयंती के उपलक्ष्य में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में कार्यक्रम की संयोजिका सुश्री रेखा राजवंशी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए गांधी जी के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सिडनी के कौंसल जनरल श्री मनीष गुप्त उपस्थित थे, जिन्होंने हिंदी प्रेमियों के बारे में बात की। इस अवसर पर व्यंग्यकार श्री संतराम बजाज जो लेखक होने के साथ-साथ एक सामुदायिक कार्यकर्ता भी है और ऑस्ट्रेलियन हिंदी एसोसिएशन ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया के पूर्व अध्यक्ष है, को 'हिंदी साहित्य सेवा सम्मान' प्रदान किया गया। सत्र का संचालन युवा शायर विराट नेहरू और सुश्री संघमित्रा कुमार ने किया।

द्वितीय सत्र में 'ऑस्ट्रेलिया में हिंदी-शिक्षण' विषय पर एक परिचर्चा हुई, जिसमें भाग लेने वाले प्रवासी भारतीय सम्मान प्राप्त श्रीमती माला मेहता व प्रो. निहाल अगर व अन्य उपस्थित अतिथि थे। सत्र का संचालन इलासा के अध्यक्ष रेखा राजवंशी ने किया। अंतिम सत्र में कविता-पाठ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर काउंसलर राज दीक्षित, हिंदू काउन्सिल के पूर्व अध्यक्ष डॉ. निहाल अगर, अनीता शर्मा, बचन शर्मा, डॉ. शैलजा चतुर्वेदी तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : इंडीयनलिंग.कॉ

होंगकोंग, चीन

14 सितंबर, 2019 को भारतीय कौंसलावास, होंगकोंग, चीन में बैंकों के अधिकारियों हेतु हिंदी दिवस मनाया गया। प्रधान कौंसुल श्रीमती प्रियंका चौहान ने गृह मंत्री का संदेश पढ़ा। इस अवसर पर निबंध, कविता-पाठ एवं भाषण प्रतियोगिताएँ तथा हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई, जिनमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साभार : भारतीय कौंसलावास, होंगकोंग, चीन का फ़ेसबुक पृष्ठ

कराकस, वेनेज़ुएला

16 सितंबर, 2019 को भारतीय राजदूतावास, कराकस, वेनेज़ुएला द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान सी.डी.ए. ने माननीय गृह मंत्री का संदेश पढ़ा तथा उपस्थित सभी लोगों को आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया। सी.डी.ए. ने आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया।

साभार : भारतीय राजदूतावास, कराकस का फ़ेसबुक पृष्ठ

मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया

14 सितंबर, 2019 को भारतीय कोंसलावास, मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया में भव्य रूप से हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने ऑस्ट्रेलिया में हिंदी के प्रचार-प्रसार की उपयोगिता पर बल दिया। विक्टोरियन स्कूल ऑव लैंग्वेजज़ के विद्यार्थियों ने महात्मा गांधी पर एक प्रस्तुतीकरण किया तथा कई कवियों समेत कविता-पाठ भी किया।

साभार : भारतीय दूतावास, मेल्बर्न, ऑस्ट्रेलिया का फ़ेसबुक पृष्ठ

मॉस्को, रूस

16 सितंबर, 2019 को भारतीय दूतावास, मॉस्को, रूस में जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से हिंदी दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में भारतीय राजदूत श्री डी.बी. वेंकटेश प्रसाद वर्मा मुख्य अतिथि थे। राजदूत ने समारोह का उद्घाटन करते हुए रूस में हिंदी विद्वानों तथा हिंदी विद्यालयों को संबोधित किया। इस अवसर पर महात्मा गांधी की शिक्षाओं पर आधारित नाटक व कविता-पाठ की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम में रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' ने भी सहयोग किया और प्रत्येक वर्ष की भांति विदेश में हिंदी के विकास के लिए कार्य कर रहे विद्वानों को मुख्य अतिथि के कर कमलों से सम्मानित किया गया, जिनमें अलेक्सांदर सेंकेविच को 'पद्मश्री मदन लाल मधु हिंदी सेवा सम्मान-2019', ड्रायुकोवा क्लारा उसाग्लिवना को 'श्री अलेक्ज़ांद्र कदाकिन हिंदी मित्र सम्मान-2019' तथा सुशील कुमार 'आज़ाद' को 'भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी दिशा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सृजन सम्मान-2019' से अलंकृत किया गया। रूसी-भारतीय मैत्री संघ 'दिशा' ने अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'दिशा' तथा सुशील आज़ाद की पुस्तक 'रतिया से रशिया : मेरा सफ़रनामा' का लोकार्पण राजदूत साहब के हाथों किया। 'दिशा' संस्था के अध्यक्ष डॉ. रामेश्वर सिंह ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : भारतीय दूतावास, मॉस्को, रूस के फ़ेसबुक पृष्ठ से

सेशेल्स

14 सितंबर, 2019 को भारतीय उच्चायोग, विक्टोरिया, सेशेल्स द्वारा हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम जनरल दलबीर सिंह सुहाग ने हिंदी निबंध और कविता-पाठ प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया तथा हिंदी भाषा के सरलीकरण पर गौर करने पर ज़ोर दिया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, सेशेल्स का फ़ेसबुक पृष्ठ

मॉरीशस
महात्मा गांधी संस्थान द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी सप्ताह

10 सितंबर, 2019 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के सुब्रमण्यम भारती सभागार में हिंदी विभाग द्वारा आयोजित

12वें हिंदी सप्ताह का शुभारंभ हुआ। भारत से पधारे श्रद्धेय कलाकार सुरेन्द्र राजन, आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पाण्डेय, विभागाध्यक्ष एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. कुमारदत्त गुदारी और विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र व प्रकाशक श्री अनिल वर्मा ने स्थानिक पौधे "फ़िकस पांडा" को जल अर्पित करते हुए हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया। हिंदी विभागाध्यक्ष ने अपने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों, प्राध्यापकों व प्रतिभागियों का सहृदय स्वागत कर सभी को शुभकामनाएँ दीं। पाँच दिवसीय हिंदी उत्सव के अंतर्गत कविता-वाचन, आशुवाक, अंत्याक्षरी पोस्टर, लघु फ़िल्म एवं नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। यह हिंदी सप्ताह 10 सितंबर से 13 सितंबर तक आयोजित हुआ।

17 सितम्बर को हिंदी सप्ताह का समापन पुरस्कार वितरण समारोह से हुआ। मुख्य

अतिथि के रूप में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री तन्मय लाल उपस्थित थे। अवसर पर छात्रों ने पूरे सप्ताह का ब्यौरा एक वीडियो द्वारा प्रस्तुत किया। हिंदी विभाग तथा अन्य विभागों के प्राध्यापक और छात्र उपस्थित रहे। संचालन डॉ. तनुजा पदारथ-बिहारी तथा श्री गुलशन सुखलाल ने किया।

श्रीमती करिश्मा देवी रामझीतन-नारायण की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गांधी संस्थान द्वारा आयोजित चार दिवसीय कार्यशाला : 'हिंदी में सृजनात्मक लेखन'

23 जुलाई से 26 जुलाई 2019 तक विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गांधी संस्थान द्वारा सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में चार दिवसीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय ***'हिंदी में सृजनात्मक लेखन'*** रहा। कार्यशाला के विशेषज्ञ महात्मा गांधी संस्थान में कार्यरत आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पांडेय रहे। यह कार्यशाला मॉरीशस के प्राथमिक हिंदी शिक्षकों और शिक्षा मंत्रालय के निरीक्षकों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला का लक्ष्य हिंदी में रचनात्मक लेखन की रुचि में गहराई लाना और रिपोर्ताज एवं संस्मरण लेखन कौशल और प्रविधियों को सशक्त करना रहा। कार्यशाला का उद्देश्य था - सृजनात्मक लेखन की कला और शिल्प को तराशना, रिपोर्ताज और संस्मरण लेखन की पद्धतियों की समझ में वृद्धि करना, शिक्षकों और प्राध्यापकों को स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिकाओं में रिपोर्ताज और संस्मरण लेखन द्वारा लेखकीय सहयोग प्रदान करने हेतु प्रोत्साहित करना तथा शिक्षकों एवं प्राध्यापकों को छात्रों को सृजनात्मक लेखन में प्रवृत्त करने व दक्ष बनाने हेतु प्रोत्साहित करना।

उद्घाटन समारोह

23 जुलाई 2019 को विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में कार्यशाला का उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री रहीं। कार्यक्रम का आरम्भ दीप-प्रज्ज्वलन से हुआ।

इस अवसर पर सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य डॉ. उदय नारायण गंगू, भारतीय उपउच्चायुक्त श्री जनेश केन, महात्मा गांधी संस्थान परिषद् के अध्यक्ष श्री जयनारायण मीतू, संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती सूर्यकांति गयान, निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल, भारतीय अध्ययन संकाय की अध्यक्षा डॉ. राजरानी गोबिन, हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री धनराज शम्भु, हिंदी प्राध्यापक, वरिष्ठ निरीक्षक, निरीक्षक, शिक्षक एवं मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी लेखक उपस्थित थे। मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने अपने संबोधन में कहा कि *"मेरा मानना है कि हमारे अध्यापक केवल कक्षा में पाठ समझाने एवं अभ्यास कराने व संशोधन करने के लिए नहीं बने हैं। आज अगर मॉरीशस में हिंदी का प्रचार-प्रसार इतना है, तो वह हमारे अध्यापकों के कारण ही है। इसी कारण मेरा मंत्रालय छात्रों एवं अध्यापकों के संपूर्ण विकास के लिए हर संभव सुविधा प्रदान करने में कार्यरत है।"*

डॉ. वेद रमण पांडेय ने अपने बीज-वक्तव्य में विश्व हिंदी सचिवालय को हिंदी भाषा और साहित्य का पूरे विश्व में एकमात्र स्मारक केंद्र बताया। यह मॉरीशस सरकार और भारत सरकार का पूरे विश्व को एक अनमोल तोहफ़ा है। आगे उन्होंने साहित्य एवं सृजनात्मकता के महत्त्व पर चर्चा करते हुए कहा कि *"मनुष्य के शरीर से ही सभी कलाएँ निकली हैं। अगर मनुष्य चलते-चलते लय से चलने लगे तो नृत्य होता है, अगर बोलते-बोलते लय से बोलने लगे तो गीत होता है, कुछ उकेरते-उकेरते लय से उकेरने लगे तो चित्र होता है और लिखते-लिखते लय से लिखने लगे तो कविता होती है। साहित्य भी एक कला है। साहित्य मनुष्य की आत्मा को गरमी देता है, इसलिए साहित्य सृजन ज़रूरी है। हम जन्म लेते हैं लेकिन मनुष्यत्व भाव पृथ्वी पर आकर अर्जित करते हैं। साहित्य से ही मनुष्यता का बोध होता है। इसलिए साहित्य सृजन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।"*

श्री जनेश केन ने कहा कि मॉरीशस आने पर उनकी जिज्ञासा यह जानने की रही कि यहाँ लोग हिंदी बोलते हैं या नहीं? यहाँ हिंदी भाषा बची है या नहीं? और यहाँ पहुँचकर

उनको जानकर अत्यन्त खुशी हुई कि हिंदी भाषा की स्थिति बहुत अच्छी है और यहाँ के लोगों ने इस भाषा को संजोए रखा है, यह सराहनीय बात है। साहित्यकार होना बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने अपने जीवन की एक घटना के बारे में बताते हुए एक सीख साझा की कि साहित्य जीवन जीना सिखाता है, बाकी विषय तो केवल समस्याओं को सुलझाना सिखाते हैं।

श्रीमती सूर्यकांति गयान ने अपने संबोधन में कहा कि सचिवालय और महात्मा गांधी संस्थान द्वारा आयोजित इस कार्यशाला से वे अत्यंत खुश हैं। उनके लिए कक्षाओं से बाहर हिंदी भाषा का प्रयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जिससे वह जीवंत बनती है, केवल अकादमिक स्तर पर ही सीमित नहीं रह जाती। हिंदी भाषा का जितना अधिक प्रयोग होगा उतना ही वह भाषा समृद्ध होगी और यह कार्यशाला वह सुनहरा अवसर है, जो लोगों को लिखने के लिए तथा भाषा प्रयोग के लिए प्रेरित करेगी। उन्होंने यह आशा भी व्यक्त की कि कार्यशाला के उपरांत प्रतिभागियों की सृजन प्रतिभा परिष्कृत होगी और वे सृजनात्मक लेखन में सक्रिय होंगे तथा महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'वसंत' एवं 'रिमझिम' पत्रिकाओं में अपना अमूल्य योगदान भी देंगे।

कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत-भाषण देते हुए विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग के लिए आभार प्रकट किया। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसी कार्यशालाएँ पहले भी हुई हैं और आगे भी होंगी। लेकिन यह कार्यशाला तभी सफल मानी जाएगी जब कुछ अच्छे रचनाकार पैदा हो जाएँ। मनुष्य होना भाग्य की बात है, किंतु रचनाकार होना सौभाग्य की बात है। भारत के बाद मॉरीशस एक ऐसा देश है जहाँ हिंदी में स्तरीय पढ़ाई-लिखाई हो रही है और हिंदी की अच्छी स्थिति है।

उद्घाटन समारोह का मंच-संचालन सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी तथा धन्यवाद-ज्ञापन महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा डॉ. अलका धनपत ने किया।

चार दिवसीय कार्यशाला प्रतिभागी :

प्रथम दिवस - 23.07.2019 को ज़ोन 1, द्वितीय दिवस - 24.07.2019 को ज़ोन 3, तृतीय दिवस - 25.07.2019 को ज़ोन 4 तथा चतुर्थ दिवस - 26.07.2019 को ज़ोन 2 के हिंदी शिक्षक (प्राथमिक) एवं हिंदी निरीक्षक।

प्रथम सत्र : 'रिपोर्ताज-लेखन' - विवेचित बिन्दुएँ :

1. हिंदी का 'रिपोर्ताज' शब्द फ्रेंच शब्द 'Reportage' से लिया गया है और इसी शब्द का अनुकरण है।
2. रिपोर्ताज लेखन स्वयं देखी घटना पर होता है, न कि किसी और की देखी हुई घटना पर।
3. 'रिपोर्ट' किसी माध्यम से देख-सुनकर लिखी जा सकती है, लेकिन 'रिपोर्ताज' सिर्फ़ प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित होता है।
4. किसी देखी हुई घटना का साहित्यिक एवं कलात्मक वर्णन 'रिपोर्ताज' है।
5. 'रिपोर्ट' में यथातथ्यता, सत्यता और वस्तुपरकता होती है, उसमें साहित्यिकता नहीं होती। रिपोर्ताज में यथातथ्यता, सत्यता, वस्तुपरकता के साथ साहित्यिकता और कलात्मकता भी होती है।
6. सूक्ष्म रूप से देखकर गहराई एवं विस्तार में जाकर रिपोर्ताज बनता है।
7. रिपोर्ताज सूचना नहीं है, रोचक एवं जीवंत वर्णन है।
8. शब्द-चित्र से इस प्रकार वर्णन किया जाए कि अनुपस्थित व्यक्ति भी उस दृश्य को देख पाए।
9. रिपोर्ताज मर्मस्पर्शी होना चाहिए और उससे रस की प्राप्ति होनी चाहिए।
10. रिपोर्ताज का विषय कभी कल्पित नहीं होता।
11. विषय और तथ्य को रोचक व मर्मस्पर्शी बनाने के लिए कल्पना का सहारा लिया जा सकता है, लेकिन महज़ कल्पना के सहारे रिपोर्ताज नहीं लिखा जा सकता।
12. रिपोर्ताज विधा का जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हुआ था, जब साहित्यिक प्रतिभा वाले पत्रकारों द्वारा युद्धक्षेत्र की घटनाओं का मर्मस्पर्शी वर्णन किया गया था, जो समाचार-पत्रों में खूब लोकप्रिय हुआ और समाचार-पत्रों की यह विधा स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में प्रसिद्ध हुई।
13. रिपोर्ताज पत्रकारिता और साहित्यिकता का संगम है।
14. साहित्यकार ही रिपोर्ताज लिख सकता है।
15. अंग्रेज़ी शब्द 'Report' से 'रिपोर्ताज' का निकट संबंध है।
16. रिपोर्ट लेखन समाचार-पत्र, सूचना-पत्र और पत्रिका के लिए होता है, जबकि रिपोर्ताज लेखन समाचार-पत्र और साहित्यिक पत्रिका के लिए होता है।
17. रिपोर्ट का कलात्मक-साहित्यिक रूप ही रिपोर्ताज है।
18. रिपोर्ट की जीवंतता एक बार में खत्म हो जाती है, लेकिन रिपोर्ताज की जीवंतता दुबारा पढ़ने पर भी बरकरार रहती है।

द्वितीय सत्र : 'संस्मरण-लेखन' - विवेचित बिन्दुएँ :

1. संस्मरण 'पुन: स्मरण' है।
2. स्मृति पटल पर अंकित कोई व्यक्ति, जीव, पशु-पक्षी, घटना, दृश्य, अविस्मरणीय क्षण, प्रसंग, रूप या बात का संस्मरण किया जाता है।
3. स्वयं देखा और अनुभव किया हुआ क्षण, बात, दृश्य, व्यक्ति घटना को स्मरण करके शब्दबद्ध करना 'संस्मरण' कहलाता है।
4. संस्मरण मार्मिक, रोचक और तथ्यपरक विवरण होता है।
5. चार तरह के संस्मरण होते हैं - व्यक्ति (चरित्र) प्रधान, जीव प्रधान, घटना प्रधान और दृश्य प्रधान।
6. व्यक्ति, पशु-पक्षी, घटना या दृश्य से जब लेखक जुड़ता है, तब वर्णन विश्वसनीय और सजीव होता है।
7. व्यक्ति, पशु-पक्षी, घटना और दृश्य के विश्लेषण में लेखक का दृष्टिकोण सक्रिय होता है।
8. व्यक्ति केन्द्रित संस्मरण में बाहरी-भीतरी चरित्र, जीवन की घटनाएँ, परिवेश और युग का उद्घाटन होता है।

गतिविधियाँ :

- कार्य सत्र के अंतर्गत प्रतिभागियों को एक रिपोर्ताज और एक संस्मरण लिखने का कार्य दिया गया और उनसे मौखिक प्रस्तुति भी करवाई गई।
- विशेषज्ञ डॉ. वेद रमण पांडेय ने प्रत्येक रचना पर अपने विचार दिए और उसको परिमार्जित करने के सुझाव भी दिए।
- प्रतिभागियों की रचनाओं द्वारा उनकी भाषा-दक्षता, उनकी कमज़ोरियों, विधा की समझ, उनकी रुचि, लेखन-कौशल,

साहित्यिक प्रतिभा आदि का ज्ञान कराया गया।

- इस कार्य के अंतर्गत प्रतिभागियों की सृजन-शक्ति को उभारा गया और उनके लिखने और समझने की प्रतिभा को सबके सामने प्रस्तुत किया गया, साथ ही उन्हें भविष्य में अच्छे लेखक बनने के तरीकों से अवगत कराया गया।
- परिचर्चा-सत्र में प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों को सुलझाया गया।
- इस अवसर पर हिंदी के वरिष्ठ निरीक्षक श्री गया तिलोकी और सहायक हिंदी निरीक्षकों ने कार्यशाला तथा शिक्षकों के सृजनात्मक कार्यों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ दीं।

कार्यशाला के दौरान विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी और महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा डॉ. अलका धनपत ने मंच-संचालन किया।

समापन समारोह :

26 जुलाई 2019 को अपराह्न 2.00 बजे कार्यशाला का समापन समारोह आरंभ हुआ। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी श्री स्वामीनाथन रागेन उपस्थित थे। साथ ही भारतीय उच्चायोग के प्रथम सचिव श्री अंकुश कपूर तथा महात्मा गांधी संस्थान परिषद् के अध्यक्ष श्री जयनारायण मीतू, निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल, भारतीय अध्ययन संकाय की अध्यक्षा डॉ. राजरानी गोबिन एवं शिक्षा मंत्रालय में कार्यवाहक स्थायी सचिव श्री युधिष्ठिर मनबोध भी उपस्थित थे।

श्री स्वामीनाथन रागेन ने चार दिवसीय कार्यशाला के आयोजन की सराहना की। उन्होंने कहा कि उनको विश्वास है कि डॉ. वेद रमण पांडेय के संचालन में चली कार्यशाला से उपस्थित प्रतिभागी शिक्षक लाभांवित हुए होंगे और सृजनात्मक लेखन के लिए उत्साहित होंगे। उन्होंने आशा व्यक्त की कि शिक्षक गण इस कार्यशाला में सृजनात्मक लेखन के तरीकों, तकनीकों, नियमों आदि से भली-भाँति परिचित हुए होंगे और आगे अपने सृजन कर्म को विकसित करेंगे।

श्री अंकुश कपूर ने प्रसिद्ध स्पेनिश कलाकार पिकासो की एक उक्ति से अपनी बात शुरू की कि *"हर बच्चा कलाकार होता है, समस्या यह है कि बड़े हो जाने पर आप अपने अन्दर के कलाकार को ज़िन्दा कैसे रखें।"* आगे उन्होंने कहा *"सृजनात्मक लेखन एक ऐसी कला है, जिसको अपने में जीवित रखने की आवश्यकता है। एक अच्छा लेखक बनने से पहले, पहला कदम होता है अपनी भाषा पर कड़ी मेहनत करना और अपनी शब्दावली में सुधार करना। यदि आपके पास सुन्दर विचार है और बताने के लिए अद्‌भुत कहानी है, तो शब्दों की कमी कहीं आपको वैसे अभिव्यक्त करने नहीं देगी, जिस तरह से आप उसको चित्रित करना चाहते हैं। अपनी शब्दावली को सुधारने के लिए आपको पढ़ना चाहिए। यह आपके व्याकरण एवं वर्तनी में सुधार करने में मदद करेगा"*

श्री जयनारायण मीतू ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह आयोजन विश्व हिंदी सचिवालय और महात्मा गांधी संस्थान के संबंध को मज़बूती प्रदान करता है। उन्होंने भविष्य में भी इन दोनों संस्थाओं के मिले-जुले सहयोग से अन्य आयोजनों की आशा व्यक्त की। साथ ही हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुँचाने में दोनों संस्थाओं के संयुक्त सहयोग का आह्वान भी किया।

डॉ. वेद रमण पांडेय ने अपने समापन-भाषण में कहा *"यह समापन समारोह अंत नहीं आरम्भ है, एक नई शुरुआत है। लिखते रहें, लिखते-लिखते आप लेखक बन जाएँगे। यह कार्यशाला मेरी नज़र में हिंदी सृजन की प्रयोगशाला है।"*

शिक्षा मंत्रालय में वरिष्ठ निरीक्षक श्री गया तिलोकी ने अपनी टिप्पणी में कहा "मुझे पूर्ण आशा है कि इस कार्यशाला के उद्देश्यों की पूर्ति हुई है। यूँ तो कुछ जन्मसिद्ध लेखक होते हैं और कुछ स्थापित रचनाकारों से प्रेरणा पाकर लेखन के क्षेत्र में उभरते हैं और कुछ अभ्यास के द्वारा स्वयं को मांजकर लेखक बनते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण है उस लेखकीय प्रतिभा को पहचाना कैसे जाए? आप्रवासी देशों में हिंदी के क्षेत्र में मॉरीशस की विशेष पहचान है। विश्व हिंदी सचिवालय एवं महात्मा गांधी संस्थान लेखकों को तराशने का काम निरंतर कर रहा है।"

सर विरास्वामी रिंगाडु प्राथमिक सरकारी पाठशाला की डेप्यूटी हेड टीचर श्रीमती इन्द्रानी सुमेसर जो कार्यशाला की सक्रिय प्रतिभागी रहीं, ने कार्यशाला पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि *"बहुत हर्ष की बात है कि प्राथमिक हिंदी शिक्षकों के लिए एक ऐसी कार्यशाला का आयोजन किया गया है, जो बहुत ही शिक्षाप्रद है। हिंदी में सृजनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के लिए हमें एक सुनहरा मौका मिला है।"*

समापन समारोह के आरम्भ में प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कार्यशाला के आयोजन एवं सफलता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले आयोजकों तथा उपस्थित प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने प्रतिभागियों के सृजनात्मक कार्यों की सराहना भी की और सचिवालय की साहित्यिक पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' में अपना योगदान देने की माँग की।

कार्यक्रम के अंत में शिक्षा मंत्रालय के सभी ज़ोन प्रतिनिधियों को प्रतिभागियों के प्रमाण-पत्र सौंपे गए। मंच-संचालन डॉ. अलका धनपत ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मेलन / अधिवेशन / परिसंवाद / उत्सव / समारोह / जयंती

पटना में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जयंती एवं कवि-गोष्ठी

7 अगस्त, 2019 को पटना में बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जयंती एवं कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। उन्होंने महाकवि तुलसीदास पर बात करते हुए उनके विश्व-विख्यात महाकाव्य 'रामचरितमानस' के माध्यम से 'लोक-नायक

कवि' के रूप में साहित्य-संसार में प्रतिष्ठा की बात की। सम्मेलन के प्रधानमंत्री डॉ. शिववंश पाण्डेय ने कहा कि तुलसी के काव्य में हिंदी की प्रबल शक्ति को देखा जा सकता है। सम्मेलन के उपाध्यक्ष नृपेंद्र नाथ गुप्त, प्रो. बासुकीनाथ झा, डॉ. कल्याणी कुसुम सिंह, डॉ. भूपेन्द्र कलसी, कुमार अनुपम, बच्चा ठाकुर, डॉ. मेहता, नगेंद्र सिंह तथा डॉ. बी. एन. विश्वकर्मा ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में वरिष्ठ कवि डॉ. शंकर प्रसाद ने ग़ज़ल-पाठ,

डॉ. मधु वर्मा ने भोजपुरी में गीत प्रस्तुति, वरिष्ठ कवि राज कुमार प्रेमी, बच्चा ठाकुर, आचार्य आनंद किशोर शास्त्री, पं. गणेश झा, रीता सिंह, राहुल राज, नवल किशोर शर्मा, डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी, सच्चिदानंद सिन्हा, राज किशोर झा, बाँके बिहारी साव, नेहाल कुमार सिंह 'निर्मल', अर्जुन प्रसाद सिंह, मुकेश कुमार ओझा आदि कवियों ने भी अपनी रचनाओं का पाठ किया। मंच-संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन आनंद किशोर मिश्र ने किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

उज्जैन में 'महात्मा गांधी : भाषा, साहित्य और लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में' त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

19-21 जुलाई, 2019 को वाग्देवी भवन स्थित राष्ट्रभाषा सभागार में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के गांधी अध्ययन केन्द्र और हिंदी अध्ययनशाला के संयुक्त तत्वावधान में 'महात्मा गांधी : भाषा, साहित्य और लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का शुभारंभ वरिष्ठ समालोचक एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. रामकिशोर शर्मा के मुख्य आतिथ्य और कुलपति प्रो. बालकृष्ण शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो. रामकिशोर शर्मा, कुलपति प्रो. बालकृष्ण शर्मा, प्रो. विनय पाठक ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मुख्य समन्वयक एवं विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया।

उद्घाटन समारोह में वरिष्ठ लेखक डॉ. देवेंद्र जोशी की पुस्तक 'सदी के सितारे' का लोकार्पण हुआ, जिसमें महात्मा गांधी सहित अनेक समाजसेवियों, लेखकों और संस्कृतिकर्मियों पर केंद्रित महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह किया गया है।

शुभारंभ समारोह के पश्चात् दो तकनीकी सत्र हुए, जिनमें बीस शोध पत्रों की प्रस्तुति हुई। सत्रों की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. रामकिशोर शर्मा और डॉ. शिव चौरसिया ने की। डॉ. सत्यकेतु सांकृत, डॉ. जवाहर कर्नावट, डॉ. हरीश प्रधान, डॉ. रामचन्द्र ठाकुर, जीवनसिंह ठाकुर, श्रीराम दवे, प्रो. गीता नायक, डॉ. देवेंद्र जोशी, डॉ. प्रभु चौधरी आदि ने सत्रों में प्रमुख वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त किए। संचालन हिना तिवारी और संदीप पांडेय ने किया। संगोष्ठी में दस राज्यों के विशेषज्ञ विद्वान एवं शोधकर्ताओं ने सहभागिता की।

संगोष्ठी में दूसरे दिन गांधी जी के विविधमुखी योगदान और लोक जीवन पर प्रभाव पर गहन विमर्श हुआ, जिसमें तीन तकनीकी सत्र हुए। मुख्य अतिथि वक्ता जयपुर के प्रो. अनिलकुमार जैन रहे।

वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई के संस्थापक डॉ. एम.एल. गुप्त, हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा, डॉ. विनय पाठक, डॉ. पूरन सहगल और डॉ. बहादुर सिंह ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।

समापन दिवस में गांधी जी के विश्वव्यापी प्रभाव पर चर्चा के साथ काव्य एवं संगीत के माध्यम से भावांजलि अर्पित की गई। इसमें तीसरे दिन चार सत्र हुए, जिसके मुख्य अतिथि जबलपुर के प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल रहे। इस संगोष्ठी में कई राज्यों के विद्वान उपस्थित थे। समारोह का संचालन डॉ. जगदीश शर्मा ने किया तथा आभार-ज्ञापन प्रो. गीता नायक ने किया।

प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा की रिपोर्ट

गुरुग्राम में 'देवनागरी लिपि, वर्तनी और हिंदी भाषा की संरचना : समस्याएँ और चुनौतियाँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला

22 अगस्त, 2019 को विश्व नागरी विज्ञान संस्थान, गुरुग्राम और केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में के.आई.आई.टी. वर्ल्ड ऑव एजुकेशन के प्रांगण में 'देवनागरी लिपि, वर्तनी और हिंदी भाषा की संरचना : समस्याएँ और चुनौतियाँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी व कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. अवनीश कुमार रहे। विश्व नागरी विज्ञान संस्थान के अध्यक्ष श्री बलदेव राज कामराह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। संस्थान के उपाध्यक्ष और के.आई.आई.टी. ग्रुप ऑव कॉलेजज़ के महानिदेशक डॉ. श्याम सुंदर अग्रवाल ने संस्थान का परिचय दिया। इसके पश्चात् प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने बीज भाषण देते हुए देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और ऐतिहासिकता की चर्चा की। प्रो. अवनीश कुमार ने अपने संबोधन-भाषण में निदेशालय की गतिविधियों का परिचय कराया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता सांस्कृतिक गौरव संस्थान, गुरुग्राम के मुख्य सलाहकार और राजभाषा हिंदी के विशेषज्ञ डॉ. महेश चंद्र गुप्त ने की। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष और डीन तथा केंद्रीय हरियाणा विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागध्यक्ष प्रो. नरेश मिश्र, विश्वयात्री और अमरोहा के सुविख्यात कॉलिज के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. कामता कमलेश, वरिष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव तथा डॉ. महेश चंद्र गुप्त ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता 'जनसत्ता' समाचार-पत्र के पूर्व संपादक और वरिष्ठ पत्रकार श्री राहुल देव ने की। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. नवीन चंद्र लोहानी एवं साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के पूर्व उपसचिव और 'समकालीन साहित्य' पत्रिका के संपादक श्री ब्रजेन्द्र ने वक्तव्य प्रस्तुत किया।

समापन सत्र में श्री बलदेव कामराह की अध्यक्षता में प्रो. गोस्वामी ने संगोष्ठी में हुई चर्चा का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिंदी की अभिव्यक्ति का सही प्रतिनिधित्व करने में देवनागरी लिपि पूर्णतया सक्षम है। यह लिपि विश्व की तमाम लिपियों में सर्वाधिक वैज्ञानिक और उपयोगी है। यदि भारतीय भाषाएँ और विश्व की भाषाएँ इसे अपना लेती हैं, तो विश्व में ऐक्य भावना पैदा होगी और उनमें आपसी वैमनस्य दूर होगा।
श्री कृष्ण कुमार गोस्वामी की रिपोर्ट

कनाडा में अखिल विश्व हिंदी समिति का 10वाँ वार्षिक अधिवेशन व विश्व कवि-सम्मेलन

3 अगस्त, 2019 को सिंधी गुरु मंदिर, टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा में अखिल विश्व हिंदी समिति के 10वें वार्षिक अधिवेशन व विश्व कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. दाऊजी गुप्त ने की तथा भारतीय कौंसलावास टोरंटो के कौंसिलधीश के प्रतिनिधि कौंसल श्री देविंदर पाल सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. भगवान शर्मा, डॉ. कैलाश भटनागर तथा समिति के उपाध्यक्ष श्री राजेश गर्ग विशिष्ट अतिथि रहे। समारोह के दौरान कवि व लेखक श्री गोपाल बघेल 'मधु' की 'अखिल विश्व हिंदी समिति' द्वारा सद्य: प्रकाशित पुस्तक 'आनन्द अनुभूति - Perception of Bliss' तथा साहित्यकार श्री श्याम त्रिपाठी की सद्य: प्रकाशित आत्मकथा 'सूखे आँसू' का विमोचन किया गया। श्री श्याम त्रिपाठी, डॉ. देवेन्द्र मिश्र, अनिल पुरोहित, श्रीमती राज कश्यप, नीरजा शुक्ल, श्यामा सिंह समेत कई अन्य कवियों व कवयित्रियों ने दो सत्रों के अंतर्गत काव्य-पाठ किया।

मुख्य अतिथियों ने साहित्यकारों को हिंदी साहित्य की सेवा करने के लिए सराहा व अपने संदेश व रचनाएँ सुनाईं। समारोह का संचालन समिति के अध्यक्ष श्री गोपाल बघेल 'मधु' ने किया तथा विश्व हिंदी संस्थान के अध्यक्ष प्रो. सरन घई सम्मेलन के सह-संचालक रहे।

श्री गोपाल बघेल 'मधु', अखिल विश्व हिंदी समिति की रिपोर्ट

रेवाड़ी में विराट कवि-सम्मेलन

5 सितंबर, 2019 को रेवाड़ी, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला के सौजन्य से मास्टर नेकीराम साहित्य एवं लोक नाट्य कला संरक्षण परिषद् द्वारा शिक्षक दिवस पर राजकीय माध्यमिक विद्यालय हँसाका, रेवाड़ी में एक 'विराट कवि-सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अतिरिक्त आयुक्त श्री प्रदीप दहिया ने अतिथि कवियों का सम्मान प्रतीक चिह्न देकर किया। कवि हलचल हरियाणवी ने गीत प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय गीतकार डॉ. जयसिंह आर्य ने वीर रस और देशभक्ति का पाठ करते हुए गाँव की महत्ता को उजागर किया। समारोह में विनय विनम्र, लाज कौशल, त्रिलोक चन्द्र, मोहन शास्त्री, सुश्री कमलेश, सगुन शर्मा, मनोज कुमार आदि उपस्थित थे। संचालक-संयोजक ने सभी अतिथियों व बाहर से आए सभी कवियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कवि-सम्मेलन का संचालन युवा कवि आलोक भंडौडिया ने किया।

साभार : दैनिक जागरण

नई दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा 'साहित्य और पत्रकारिता' विषय पर परिसंवाद

22 अगस्त, 2019 को नई दिल्ली में साहित्य अकादमी द्वारा 'साहित्य और पत्रकारिता' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। साहित्य अकादमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात पत्रकार एवं माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य डॉ. कमल किशोर गोयनका ने दिया। बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. अरुण कुमार भगत ने कहा कि साहित्य और पत्रकारिता दोनों ने ही आज बाज़ार प्रेरित नज़रिया अपना लिया है, जो कि सही नहीं है, बल्कि समाज के लिए भी घातक है। उद्घाटन सत्र का संचालन हिंदी संपादक श्री अनुपम तिवारी ने किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता हिंदुस्तानी अकादमी के अध्यक्ष श्री उदय प्रताप सिंह ने की और प्रो. कुमुद शर्मा, उदय कुमार एवं डॉ. अवनिजेश अवस्थी ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। परिसंवाद के अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार राय ने की और श्री अशोक कुमार ज्योति, श्री जीतेंद्र वीर कालरा, श्रीमती किरण चोपड़ा ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

साभार : आजतक साहित्य

गोवा में 'कोंकणी-हिंदी साहित्य में परस्पर भाव-प्रभाव : एक तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद

19-20 अगस्त, 2019 को गोवा विश्वविद्यालय के सभागार में, बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा गोवा विश्वविद्यालय के कोंकणी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'कोंकणी-हिंदी साहित्य में परस्पर भाव-प्रभाव : एक तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन और गोवा विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से कोंकणी-हिंदी समेत भारत की सभी भाषाओं के बीच परस्पर सहयोग, आत्मीय सौहार्द तथा संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने तथा सम्पर्क भाषा बनाने के प्रयास को लेकर दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन गोवा की राज्यपाल महामहिम डॉ. मृदुला सिन्हा ने किया।

इस अवसर पर बीज वक्तव्य देते हुए सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि कोंकणी और हिंदी समेत भारत की प्रायः सभी भाषाएँ आर्य-कुल की भाषाएँ हैं। गोवा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. वरुण साहनी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दो दिवसीय संगोष्ठी में 8 वैचारिक-सत्रों में कथा-साहित्य, नाट्य-साहित्य, काव्य-साहित्य तथा अनुवाद साहित्य के विविध विषयों पर चर्चा हुई, जिनमें गोवा के वरिष्ठ साहित्यकारों ने अपने पत्र प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर, गोवा के वरिष्ठ कवि नागेश करमली की अध्यक्षता में एक कवि-सम्मेलन का भी आयोजन हुआ, जिसमें दोनों ही भाषाओं में कवियों और कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। डॉ. नागेश्वर प्रसाद यादव, कृष्ण रंजन सिंह, बिंदेश्वर गुप्त तथा शशिभूषण कुमार ने विभिन्न सत्रों में धन्यवाद-ज्ञापन किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

वर्धा में नई शिक्षा नीति के प्रारूप पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संवाद का आयोजन

16 और 17 जुलाई, 2019 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा तथा विश्वविद्यालय के हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा महादेवी वर्मा सभागार में राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समापन समारोह के अवसर पर बाबासाहब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के कुलाधिपति डॉ. प्रकाश बरतूनिया, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के सदस्य प्रो. किरण हज़ारिका, हिमाचल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री, प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, कार्यकारी कुलसचिव प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर और अन्य विद्वान उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रो. अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति प्रो. गिरीशवर मिश्र, डॉ. बरतूनिया एवं प्रो. हज़ारिका ने हिंदी भाषा पर अपने विचार व्यक्त किए। दो दिवसीय संवाद कार्यक्रम में चर्चाओं के आधार पर संस्तुतियाँ तैयार की गई हैं, जो माँगे गए सुझावों के अंतर्गत भारत सरकार को भेजे जाएँगे। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष और अन्य अध्यापक प्रमुखता से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हिंदी शिक्षण-अधिगम केंद्र के संयुक्त निदेशक एवं संवाद कार्यक्रम के संयोजक प्रो. अवधेश कुमार ने किया तथा आभार-ज्ञापन कार्यकारी कुलसचिव प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने किया।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

नोएडा में 5वाँ वैश्विक साहित्य उत्सव

11 सितंबर, 2019 को नोएडा स्थित मारवाह स्टूडियो में 'उद्भव' (सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था) और मारवाह स्टूडियो के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी एवं अन्य भाषाओं पर 5वाँ वैश्विक साहित्य उत्सव 2019 का आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. स्नेह सुधा नवल ने की। इस अवसर पर श्री शैलेन्द्र शैल, डॉ. विवेक गौतम, डॉ. आशीष कंधवे, श्री राकेश पांडेय, श्रीमती कृष्णा मिश्र भट्टाचार्य, श्रीमती तरन्नुम, इंदिरा टेकचंदानी, श्रीमती आभा चौधरी, श्रीमती शोभना मित्तल तथा डॉ. वीना मित्तल आदि कवि-कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन 'उद्भव' के महासचिव डॉ. विवेक गौतम ने किया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

दिल्ली में 'नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं की स्थिति' पर परिचर्चा, भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह एवं काव्योत्सव

21 जुलाई, 2019 को हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी एवं दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में अमीर खुसरो सभागार, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली में 'नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं की स्थिति' पर परिचर्चा, भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह एवं काव्योत्सव का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को दो सत्रों में बाँटा गया। इस परिचर्चा सत्र में विशिष्ट वक्ताओं के रूप में वरिष्ठ पत्रकार तथा भारतीय भाषाओं के संवर्धन के पक्षधर श्री राहुल देव, सुविख्यात हास्य कवि एवं हिंदी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र शर्मा, लेखिका, पत्रकार एवं जेल सुधारक डॉ. वर्तिका नन्दा, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली के निदेशक श्री अवनीश कुमार, उ. प्र. राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रो. विशेष कुमार गुप्त, शिक्षाविद, लेखिका एवं हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय की निदेशिका प्रो. कुमुद शर्मा, पत्रकार एवं प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया के उपाध्यक्ष श्री दिनेश तिवारी तथा हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं की स्थिति पर अपने-अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए। परिचर्चा में प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया था, जहाँ विभिन्न विद्यालयों के भाषा शिक्षकों ने विशिष्ट वक्ताओं के सामने अपनी-अपनी जिज्ञासाओं को रखा और विषय विशेषज्ञ वक्ताओं ने उन पर विस्तृत रूप से चर्चा की। कार्यक्रम में देश के प्रबुद्ध शिक्षाविदों, विख्यात वक्ताओं, विषय विशेषज्ञों, विभिन्न संचार माध्यमों के पत्रकारों, जाने-माने साहित्यकारों, दिल्ली प्रदेश के 150 विद्यालयों के हिंदी भाषा के शिक्षकों सहित गुरुग्राम, गाज़ियाबाद तथा नोएडा से भी कई विद्वत जनों की उपस्थिति रही।

काव्योत्सव सत्र में विशिष्ट अतिथियों के रूप में आकाशवाणी के पूर्व निदेशक एवं साहित्यकार, डॉ. लक्ष्मी शंकर बाजपेयी, वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार डॉ. बी.एल. गौड़, विख्यात व्यंग्यकार एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के संपादक डॉ. लालित्य ललित, कवयित्री सुश्री कमला सिंह ज़ीनत, शिक्षाविद एवं साहित्यकार डॉ. हरीश अरोड़ा, शिक्षाविद एवं साहित्यकार डॉ. रवि शर्मा 'मधुप', राजभाषा, गृह मंत्रालय के उप संपादक, डॉ. धनेश द्विवेदी तथा शिक्षाविद् एवं साहित्यकार डॉ. रमेश तिवारी उपस्थित थे। इस सत्र में विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों ने अपनी-अपनी प्रतिनिधि रचनाओं का पाठ किया। विशिष्ट अतिथियों ने भी अपनी कविताओं और ग़ज़लों का पाठ किया। बाल कवि जश्न ने अपनी कविता एवं प्रस्तुति से उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया। इस अवसर पर दिल्ली के हिंदी भाषा के 150 शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

साभार : हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी.कॉम

लंदन में साहित्यिक समारोह

17 जुलाई, 2019 को नेहरू सेंटर, लंदन में वातायन पोएट्री ऑन साउथ बैंक द्वारा एक साहित्यिक समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्रिस्टल के मेयर माननीय टॉम आदित्य रहे तथा अध्यक्षता डॉ. पद्मेश गुप्त ने की। समारोह के दौरान लेखिका और अनुवादक डॉ. उर्मिला जैन की पुस्तक 'ट्रेमोन्टाना' तथा वरिष्ठ अनुसंधानकर्ता और कथाकार डॉ. कमला

दत्त के कहनी-संग्रह 'अच्छी औरतें' पर चर्चा तथा उपस्थित लेखिकाओं द्वारा एक कहानी का नाटकीय-पाठ किया गया। श्रीमती शैल अग्रवाल ने डॉ. उर्मिला जैन की पुस्तक 'ट्रेमोन्टाना' की समीक्षा करते हुए कहा कि लेखिका ने अंग्रेज़ी अनुवाद से हिंदी में अनुवाद करके अपने उत्कृष्ट लेखन का प्रमाण दिया है, जबकि डॉ. अचला शर्मा ने डॉ. कमला दत्त के कहानी-संग्रह 'अच्छी औरतें' की समीक्षा करते हुए कहा कि लेखिका की यह रचना प्रसिद्ध है तथा उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. निखिल कौशिक ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्रीमती अरुणा सब्बरवाल ने किया।

दिव्या माथुर, वातायन की रिपोर्ट

सिंगापुर में 'साहित्य के ख़ज़ाने से' समारोह

6 जुलाई, 2019 को आर्यसमाज भवन, सिंगापुर में हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यरत सिंगापुर संगम संस्था तथा डी.ए.वी. हिंदी स्कूल सिंगापुर द्वारा 'साहित्य के ख़ज़ाने से' समारोह का आयोजन किया गया। सिंगापुर में यह इस प्रकार का पहला आयोजन था।

समारोह के दौरान हिंदी के 4 श्रेष्ठ साहित्यकारों श्री मैथिलीशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, मुंशी प्रेमचंद और रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाओं पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। उनके रचना संसार से श्रेष्ठ कविताओं, कहानियों के दौर के साथ ही प्रेमचंद की कहानियों का बाईस्कोप दिखाने, कविता को गीतबद्ध करने, काव्य-नृत्य प्रस्तुत करने से लेकर महादेवी वर्मा के जीवन को संवाद नाटक के रूप में दिखाने के नए प्रयोग ने 'साहित्य के ख़ज़ाने से' कार्यक्रम को सफल बनाया। सिंगापुर में 28 प्रतिभागियों द्वारा हिंदी साहित्य की इतनी बेहतरीन प्रस्तुति पहले कभी नहीं हुई थी। शनिवार की दोपहर में लगातार तीन घंटे तक लगभग 150 कुर्सियों के भरे रहने के माहौल ने प्रमाणित किया कि सिंगापुर में साहित्य के पुजारियों की कमी नहीं है।

डॉ. संध्या सिंह की रिपोर्ट

बिहार में कथाकार सगीर रहमानी का कहानी-पाठ

24 अगस्त, 2019 को जनवादी लेखक संघ, बिहार के तत्वावधान में सूर्या कम्प्लेक्स, जमाल रोड के सभागार में उर्दू-हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार सगीर रहमानी का कहानी-पाठ आयोजित किया गया। इस अवसर पर सगीर रहमानी ने अपनी लोकप्रिय कहानी 'पोस्टर' का वाचन किया। 'पोस्टर' कहानी में सोवियत संघ के विघटन के बाद वहाँ के समाज में हुए बदलाव और विसंगतियों की बारीकियों का शब्द-चित्र पेश किया गया है। कहानी में वर्णित पात्रों तथा प्राकृतिक दृश्यों का सम्मोहन श्रोताओं को अंत तक बांधे रखा। वरिष्ठ आलोचक श्रीराम तिवारी ने कहानी पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी दी। 'प्राच्य प्रभा' के संपादक विजय कुमार सिंह एवं वरिष्ठ साहित्यकार घमंडी राम ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय वक्तव्य डॉ. नीरज सिंह ने दिया।

डॉ. सीमारानी, सुमन चतुर्वेदी, नूतन सिन्हा, गणेश शंकर सिंह, आर. प्रवेश, अशोक कुमार मिश्र, मनोज चंद्रवंशी, अवधेश प्रसाद समेत अन्य वक्ताओं ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहानी को सभी दृष्टिकोण से समीचीन बताया। इस अवसर पर सीटू के राज्य महासचिव गणेश शंकर सिंह, जनवादी संस्कृति मोर्चा के राज्य अध्यक्ष अशोक कुमार मिश्र, जनवादी नौजवान सभा के राज्य अध्यक्ष मनोज कुमार चंद्रवंशी, एस.एफ़. आई. के राज्य अध्यक्ष शैलेन्द्र यादव, पीपुल्स लिटरेचर सेंटर के किशोर, मोख्तार सिंह, कुशवाहा नंदन, ज़फ़र इकबाल, शैलेन्द्र यादव, किशोर कुमार, आयुष राज, आदित्य राज, दीपक कुमार, उमेश कुमार तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विनीताभ ने किया और धन्यवाद-ज्ञापन जनवादी लेखक संघ के ज़िला सचिव घमंडी राम ने किया।

साभार : दैनिक जागरण

वर्धा में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 133वीं जयंती

3 अगस्त, 2019 को महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉ. सरोजिनी नायडू भवन, वर्धा में राष्ट्रकवि स्मृति समिति, वर्धा और विद्यार्थी परिषद् महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्था सेवाग्राम के संयुक्त तत्वावधान में पद्मविभूषण राष्ट्रकवि स्व. मैथिलीशरण गुप्त की 133वीं जयंती का आयोजन किया गया।

समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. कुमकुम गुप्त रहीं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती को गुप्त जी के साथ जोड़कर देखते हुए इस बार परिचर्चा का विषय 'श्री मैथिलीशरण गुप्त, गांधी विचार और आज का समय' रखा गया।

वक्ताओं में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. सूरज पालीवाल, गांधी विचार परिषद्, वर्धा के निदेशक श्री भरत महोदय, बुंदेलखंड महाविद्यालय झांसी की हिंदी विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. कुसुम गुप्त और सूरत से पधारे डॉ. कन्हैया लाल मिश्र रहे, जिन्होंने गांधी विचार से ओतप्रोत गुप्त जी की रचनाओं को आज के संदर्भ से जोड़ा, जिसमें महिला सशक्तिकरण, समाजोद्धार, पर्यावरण संरक्षण, सांप्रदायिक सद्भाव आदि विषयों पर प्रकाश डालते हुए प्रमाणित किया कि कवि भविष्य-द्रष्टा भी होता है।

इस अवसर पर दिवंगत साहित्य विभूतियों श्री अटल बिहारी बाजपेयी, कृष्णा सोबती, विष्णु खरे तथा नामवर सिंह को श्रद्धांजलि भी अर्पित की गई। महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा स्वरचित हिंदी काव्य प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसके अंतर्गत विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनुपमा गुप्त ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि तथा कई साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

श्री बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

लोकार्पण

नागपुर में डॉ. मिथिलेश अवस्थी के नए लघुकथा-संग्रह 'कहाँ है नदी माई' का लोकार्पण

21 सितंबर, 2019 को नागपुर के विदर्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन के मोर भवन सभागार में नागपुर विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डॉ. मिथिलेश अवस्थी के नए लघुकथा-संग्रह 'कहाँ है नदी माई' का लोकार्पण किया गया। इस भव्य समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध लेखक एवं विद्वान डॉ. ओम प्रकाश मिश्र ने की। नवभारत दैनिक अखबार के संपादक संजय तिवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. आशीष कंधवे विशिष्ट अतिथि एवं वक्ता के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता नागपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा डॉ. वीणा दाढ़े थीं। इस अवसर पर लघुकथाओं के वर्तमान और भविष्य में होने वाले बदलाव पर एक सार्थक चर्चा भी हुई, जिससे वहाँ उपस्थित लेखकों, रचनाकारों और श्रोताओं को लघुकथा की महत्ता के वर्तमान परिदृश्य है, के बारे में जानकारी मिल पाई। इस अवसर पर नागपुर के कई सुप्रसिद्ध रचनाकार भी सभागार में उपस्थित थे, जिनमें उषा अग्रवाल पारस, कृष्ण नागपाल, श्रीमती आरती सिंह एकता, डॉ. इंदिरा किसलय, रचना सिंह, श्रीमती कमलेश चौरसिया आदि थे ।

आभार : विश्व हिंदी साहित्य परिषद्, नागपुर

पटना में कथा-संग्रह 'प्रिसाइडिंग औफ़िसर की डायरी' का लोकार्पण तथा लघुकथा-गोष्ठी

31 जुलाई, 2019 को पटना में कथा-सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में कथाकार चितरंजन लाल भारती के सद्य: प्रकाशित कथा-संग्रह 'प्रिसाइडिंग औफ़िसर की डायरी' का लोकार्पण समारोह तथा लघुकथा-गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि कथाकार चितरंजन लाल भारती की कहानियाँ यथार्थ पर आधारित हैं तथा उनकी कहानियाँ प्रेमचंद के काफ़ी निकट दिखाई देती हैं। पुस्तक का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ कथाकार जियालाल आर्य ने कहा कि पुस्तक के लेखक ने पूर्वोत्तर भारत के जन-जीवन को अपनी कहानियों का विषय बनाया है, जो स्वाभाविक है। सम्मेलन के प्रधानमंत्री डॉ. शिववंश पाण्डेय ने कहा कि प्रेमचंद 'युगबोध' के महत्त्वपूर्ण लेखक हैं। उन्होंने अपने युग की सभी प्रवृत्तियों को समझा और उसे अपनी सर्जना का विषय बनाया। प्रेमचंद अपनी कहानियों में आज भी ज़िंदा और आज भी प्रासंगिक हैं। सम्मेलन के उपाध्यक्ष नृपेंद्रनाथ गुप्त, प्रो. बासुकीनाथ झा, डॉ. भूपेन्द्र कलसी, डॉ. मधु वर्मा, बच्चा ठाकुर, डॉ. बी.एन. विश्वकर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित लघुकथा-गोष्ठी में डॉ. शंकर प्रसाद ने 'पोटली के दाने' शीर्षक से, डॉ. मधु वर्मा ने 'जन्मदिन का उपहार', डॉ. मेहता नागेन्द्र सिंह ने 'भ्रम', अमियनाथ चटर्जी ने 'टेढ़ी अंगुली', पुष्पा जमुआर ने 'साँठ-गाँठ', रेखा भारती ने 'जलेबियाँ', श्वेता मिनी ने 'दहलीज़', योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने 'वह पगहा तुड़ा गई', सच्चिदानंद सिन्हा ने 'पंडुकी', अर्जुन प्रसाद सिंह ने 'एक खुराक में', राज किशोर झा ने 'सबसे मूल्यवान', अजय कुमार सिंह ने 'जैसी करनी, वैसी भरनी', शंकर शरण आर्य ने 'यह भी क्या ज़िंदगी', रवींद्र सिंह ने 'विद्या' तथा निशिकांत ने 'श्वान' शीर्षक से अपनी लघुकथा का पाठ किया। मंच-संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

श्री अनिल सुलभ की रिपोर्ट

पटना में श्री बाँके बिहारी साव के व्यंग्य-संग्रह 'हे राम ! मर गया धनी राम' का लोकार्पण

8 अगस्त, 2019 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में व्यंग्यकार श्री बाँके बिहारी साव के व्यंग्य-संग्रह 'हे राम ! मर गया धनी राम' का लोकार्पण किया गया।

हिंदी प्रगति समिति, बिहार के अध्यक्ष और सुप्रसिद्ध कवि सत्य नारायण ने पुस्तक का लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की।

सम्मेलन के उपाध्यक्ष नृपेंद्रनाथ गुप्त, प्रो. बासुकीनाथ झा, कवयित्री किरण सिंह, डॉ. अशोक प्रियदर्शी, ओम प्रकाश पाण्डेय 'प्रकाश', शिवेंद्र शर्मा, योगेन्द्र प्रसाद मिश्र, डॉ. लक्ष्मी सिंह, बी. भगत तथा विभा कुमारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कई कवि समेत प्रबुद्धजन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मंच का संचालन आनंद किशोर शास्त्री ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

रांची में श्री मिथिलेश अकेला की पुस्तक 'उलटी उड़ान' का लोकार्पण

17 अगस्त, 2019 को रांची के प्रेस क्लब में मिथिलेश अकेला के कहानी-संग्रह 'उलटी उड़ान' का विमोचन किया गया। साहित्यकार विद्याभूषण, प्रमोद कुमार झा, पंकज मित्र, कुमार बृजेन्द्र, राजश्री जयंती आदि की उपस्थिति में पुस्तक का विमोचन किया गया। अध्यक्षता करते हुए विद्याभूषण ने कहा कि 'उलटी उड़ान' की कहानियाँ सामाजिक परिवेश का ताना-बाना इस तरह बुनती हैं कि पाठक इसकी गिरफ़्त में आ जाता है। समारोह में कथाकार पंकज मित्र ने शिल्प और कथ्य की व्याख्या करते हुए कहा कि शिल्प की दुरूहता के कारण कहानी कभी-कभी अबूझ बन जाती है, पढ़ने वाला ऊब जाता है, लेकिन मिथिलेश अकेला की कहानियों में ऐसी बात नहीं है। इनकी कहानियाँ स्पष्ट, सादा एवं दिल को छू लेने वाली हैं तथा सामाजिक परिवेश को दर्शाती हैं। इनकी कहानियों में लोक तत्व भी है, जो कहानी को आकर्षक, रोचक एवं पठनीय बनाता है। दूरदर्शन के पूर्व निदेशक पी.के. झा ने कहा कि इनकी कहानी समय एवं परिवेश और समाज की पहचान कराती है। नरेंद्र झा ने कहानी के शिल्प और कथ्य के महत्व पर प्रकाश डाला और संग्रह को पठनीय एवं

रोचक बताया। अंत में मिथिलेश अकेला ने संग्रह की 13 कहानियों में 6 कहानियों की चर्चा की। समारोह में एम.एम. शर्मा, एस. सहाय, इज़हार अहमद, सुधांशु, अमर कुमार, कुंदन सिंह, डॉ. शैल बाला दास, मंजु सहाय, गुफ़रान अशरफ़ी, खालिक परदेशी, हिमालय झा, कृतिक वर्मा तथा अन्य साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। डॉ. शैल बाला, पूर्व प्राचार्य चाईबासा ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। कुमार बृजेन्द्र ने संचालन करते हुए मिथिलेश अकेला की साहित्यिक यात्रा का वर्णन किया और इसे साहित्य जगत के लिए एक उपलब्धि बताया।

साभार : प्रभातखबर.कॉम

'हिंची' पत्रिका का लोकार्पण

14 अगस्त, 2019 को केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली में 'हिंची' पत्रिका का लोकार्पण किया गया। 'हिंची' पत्रिका हिंदी-चीनी भाषा, संस्कृति और साहित्य के माध्यम से दोनों देशों के मैत्री संबंध को मज़बूत करने का कार्य कर रही है। इस अवसर पर सभी विद्वानों का स्वागत करते हुए निदेशालय और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. अवनीश कुमार ने चीन में हिंदी के प्रति बढ़ते प्रेम और हिंदी सीखने की रुचि पर प्रसन्नता ज़ाहिर की। कार्यक्रम के अध्यक्ष ने चीन यात्रा के दौरान हुए अपने अनुभवों को साझा किया और विभिन्न देशों के मध्य भाषिक और साहित्यिक शोध के माध्यम से अकादमिक संबंधों को मज़बूत करने की बात कही। पत्रिका के प्रमुख संपादक, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर तथा शंघाई में पूर्व आई.सी.सी.आर. हिंदी चेयर डॉ. नवीन चंद्र लोहनी ने अपने ढाई वर्ष के चीन प्रवास के अनुभवों को साझा किया और चीन में हिंदी की दशा और दिशा पर रोचक और महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। कार्यक्रम में श्री नारायण कुमार, प्रोफ़ेसर देवेंद्र चौबे, डॉ. गंगा प्रसाद विमल, श्री राजीव रंजन, श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, श्री राकेश दुबे, श्री अनिल जोशी तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : डॉ. नूतन पाण्डेय का फ़ेसबुक पृष्ठ

पुरस्कार / सम्मान

हैदराबाद में गोइन्का पुरस्कार व सम्मान समारोह

10 अगस्त, 2019 को हैदराबाद के फापक्की सभागृह में कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन द्वारा वरिष्ठ तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकारों एवं हिंदी पत्रकारों के सम्मानार्थ समारोह आयोजित किया गया। डॉ. अहिल्या मिश्र की अध्यक्षता में फ़ाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों और पत्रकारों के योगदान को सराहा व संस्था का परिचय दिया। इस वर्ष उनके साहित्यिक योगदान के लिए आंध्र प्रदेश के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकारों के सम्मान में घोषित 'भाभीश्री रमादेवी गोइन्का हिंदी साहित्य सम्मान 2019' से वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. शुभदा वांजपे को सम्मानित किया गया। हैदराबाद के वरिष्ठ हिंदी-तेलुगु अनुवादक डॉ. पी. नागपद्मिनी को प्रख्यात लेखक श्री देवशंकर नवीन की तेलुगु पुस्तक 'राजकमल चौधरी की संकलित कहानियाँ' की हिंदी में अनुसृजन तथा उनके द्वारा हिंदी व तेलुगु साहित्य के प्रति किए गए समग्र योगदान हेतु 'गीतादेवी गोइन्का हिंदी तेलुगु अनुवाद पुरस्कार 2019' से पुरस्कृत किया गया। साथ ही आंध्र प्रदेश के हिंदी पत्रकारिता जगत के वरिष्ठ पत्रकारों के सम्मानार्थ घोषित 'गौरीशंकर गोइन्का पत्रकारिता सम्मान' से हैदराबाद 'साक्षी मीडिया ग्रुप' के कर्मठ पत्रकार श्री विजय कुमार को सम्मानित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. अहिल्या मिश्र ने की। इस अवसर पर हैदराबाद पुरस्कार समिति के सदस्य श्री वेणुगोपाल भट्टड़, डॉ. एम. रंगय्या, अनीता श्रीवास्तव एवं श्रीमती ललिता गोइन्का सहित हैदराबाद के अनेक गण्यमान्य साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे।

श्री कमलेश यादव की रिपोर्ट, कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन

लंदन में श्री इंद्रजीत शर्मा और डॉ. ओम प्रकाश गट्टाणी को 'भारत गौरव सम्मान'

19 जुलाई, 2019 को ब्रिटिश पार्लियामेंट, लंदन के हाउस ऑफ़ कॉमंस के सभागार में भारत के सुप्रसिद्ध समाजसेवी इंद्रजीत शर्मा और डॉ. ओम प्रकाश गट्टाणी को 'भारत गौरव सम्मान' से अलंकृत किया गया। अमेरिका में बसे भारत के आप्रवासी व्यवसायी एवं देश के प्रसिद्ध समाज सेवी इंद्रजीत शर्मा को भारतीय विशिष्ट अमेरिकी के रूप में उत्कृष्ट कार्यों एवं मानव सेवा करने के लिए एवं श्री गट्टाणी को क्षेत्रीय संस्कृति के संरक्षण के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान मुख्य संरक्षक श्री हुकमचंद गणेशिया एवं 'संस्कृति' संस्था के अध्यक्ष श्री सुरेश मिश्र की उपस्थिति में ब्रिटेन की मंत्री बरोनेश वर्मा, ब्रिटिश सांसद श्री वीरेंद्र शर्मा, श्री सुरेश मिश्र, सुप्रसिद्ध कवि शैलेश लोढ़ा एवं अन्य गण्यमान्य अतिथियों द्वारा प्रदान किया गया।

इस अवसर पर विश्व प्रसिद्ध उद्योगपति प्रकाश पी. हिंदूजा एवं भारत के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं राजनेता नवीन जिंदल, असम के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, लेखक और उद्योगपति श्री ओम प्रकाश गट्टाणी, 'तारक मेहता का उलटा चश्मा' के निदेशक असित कुमार मोदी एवं विश्व के कई अन्य गणमान्य विभूतियों को भी 'भारत गौरव सम्मान' से अलंकृत किया गया।

'भारत गौरव सम्मान' विगत 6 वर्षों से ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा आयोजित होने वाला एक अत्यंत गौरवशाली सम्मान है, जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले विशिष्ट भारतीयों को दिया जाता है।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे की रिपोर्ट

देहरादून में दो विभूतियों को मिला 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट आवर्ड'

5 सितंबर, 2019 को प्रगतिशील क्लब द्वारा ट्रान्ज़िट हॉस्टल सभागार, देहरादून में 'लाइफ़टाइम अचीवमेंट आवर्ड' का आयोजन किया गया। यह 'लाइफ़टाइम

अचीवमेंट आवर्ड 2019' एच.एन.बी. विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. आई.पी. सक्सेना तथा साहित्यकार ज्ञानेन्द्र कुमार को उनके साहित्य, कला और संगीत के क्षेत्र में उनकी जीवन पर्यन्त उल्लेखनीय सेवाओं के लिए दिया गया। समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली दूरदर्शन के पूर्व स्टेशन इंजीनियर श्री ओ.पी. गुप्त तथा विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध उद्योगपति डॉ. एस. फ़ारूख रहे। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष डॉ. ए.पी. सक्सेना तथा सचिव पीयूष भटनागर ने दोनों विभूतियों को सम्मानित किया। समारोह में आई. वी. कोचगवे, पर्यावरणविद् जगदीश बावला, संस्कार भारती के संगठन मंत्री रोशन लाल, डॉ. मनोज अग्रवाल, अनिता मारकंडे, राकेश जैन, नीलम बिष्ट, राजेन्द्र बलोदी, भौहर जलालाबादी, रईस अहमद फ़िगार, मोहन गुप्त, राजीव अग्रवाल तथा अन्य साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। कार्य का संचालन श्री जगदीश बावला ने किया।

साभार : श्री ज्ञानेन्द्र कुमार की रिपोर्ट

न्यूयॉर्क में डॉ. आशीष कंधवे को 'विश्वारोही रत्न सम्मान'

18 अगस्त, 2019 को आर्य समाज, न्यूयॉर्क अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रतिष्ठित साहित्यकार, कवि एवं 'गगनांचल' पत्रिका के सह-संपादक डॉ. आशीष कंधवे को हिंदी को वैश्विक विस्तार और प्रतिष्ठा दिलाने के लिए किए गए प्रयासों को सराहते हुए 'विश्वारोही रत्न सम्मान' प्रदान किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि साहित्यकार वेद प्रकाश बटुक तथा विशिष्ट अतिथि प्रो. सुषम बेदी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता 'गगनांचल' के संपादक श्री हरीश नवल ने की। न्यूयॉर्क में प्रबुद्ध साहित्यकारों और गण्यमान्य नागरिकों की उपस्थिति में यह सम्मान 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति संयुक्त राज्य अमेरिका' के अध्यक्ष मेजर शेर बहादुर सिंह, 'न्यूयॉर्क हिंदी समिति' के निदेशक रणवीर कुमार और समिति के संरक्षक समाजसेवी इंद्रजीत शर्मा द्वारा प्रदान किया गया।

इस अवसर पर न्यूयॉर्क के भारतीय कोंसलावास में 'गगनांचल' के 'अमेरिका और कनाडा हिंदी लेखन विशेषांक' का लोकार्पण भारतीय कोंसलेट जनरल संदीप चक्रवर्ती द्वारा किया गया। इस अवसर पर सुषम बेदी, स्नेह सुधा नवल और अनिल प्रभा कुमार की सद्यः प्रकाशित पुस्तकों का भी लोकार्पण हुआ।

समारोह के अंतर्गत व्यंग्य-पाठ और कवि गोष्ठी का आयोजन भी हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री अनूप भार्गव ने किया।

साभार : दैनिक जागरण

लखनऊ में साहित्यकार व ब्लॉगर्स का हुआ सम्मान

25 अगस्त, 2019 को उत्तर प्रदेश प्रेस क्लब, लखनऊ में आयोजित परिकल्पना संस्था के 13वें वार्षिक महासभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिकल्पना की अध्यक्षा माला चौबे और महासचिव डॉ. रवींद्र प्रभात द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों से पधारे ब्लॉगर्स, साहित्यकार और बुद्धिजीवियों को सम्मानित किया गया। चर्चित ब्लॉगर व साहित्यकार एवं लखनऊ मुख्यालय परिक्षेत्र के निदेशक, डाक सेवाएँ श्री कृष्ण कुमार यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में लखनऊ की संस्था 'परिकल्पना' का अहम स्थान है। विश्व के 11 देशों में 'ब्लॉगोत्सव' और 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी उत्सव' का आयोजन कर चुकी यह संस्था हिंदी भाषा को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देने की दिशा में बड़ा काम कर रही है। विशिष्ट अतिथि महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुनील कुलकर्णी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

'परिकल्पना' की नई कार्यकारिणी के गठन के साथ नए उत्तरदायित्व ग्रहण करने वाले सदस्यों को पद और गोपनीयता की शपथ भी दिलाई गई। साथ ही 'परिकल्पना' के जानकीपुरम, लखनऊ स्थित नए परिसर का लोकार्पण भी डाक निदेशक श्री कृष्ण कुमार यादव ने किया। श्री कृष्ण कुमार यादव, अवधी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राम बहादुर मिश्र तथा 'परिकल्पना' की अध्यक्षा माला चौबे ने भी वक्तव्य प्रस्तुत किया।

साभार : रवींद्र प्रभात

लखनऊ में आशा पांडेय ओझा को 'श्रीमती गीता श्रीवास्तव कवि लोक शक्ति सम्मान'

11 जुलाई, 2019 को लखनऊ में 'कविलोक' संस्था व 'नवाब' शाहाबादी परिवार द्वारा सम्मान समारोह तथा काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में सम्मान समारोह व पुस्तक लोकार्पण सम्पन्न हुआ तथा द्वितीय चरण में एक सरस काव्य गोष्ठी भी सम्पन्न हुई। 'नवाब' शाहाबादी स्मृति संध्या में इस वर्ष पंचकूला से डॉ. श्याम सखा 'श्याम' को 'कविलोक गौरव सम्मान' तथा उदयपुर से श्रीमती आशा पाण्डेय ओझा को 'कविलोक शक्ति सम्मान' से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम में 'नवाब' शाहाबादी के गज़ल-संग्रह 'ये अन्दाज़े-बयाँ' के द्वितीय संस्करण का लोकार्पण भी किया गया।

द्वितीय सत्र में एक सरस कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना तथा कविलोक गीत से हुआ। अतिथियों का स्वागत संस्था के सचिव राजेश राज ने किया। कार्यक्रम में स्थानीय व बाहर से पधारे अतिथि कवियों ने अपनी भागीदारी दी। कार्यक्रम का संचालन राजेश राज ने किया।

साभार : उदयपुर टाइम्स.कॉम

श्रद्धांजलि

माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा

6 अगस्त 2019 को भारत की पूर्व विदेश मंत्री और भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज का निधन हो गया। 7 अगस्त 2019 को शाम चार बजे दिल्ली में उनका अंतिम संस्कार किया गया। श्रीमती स्वराज विदेश मंत्री के रूप में विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् की सहअध्यक्षा रह चुकी हैं।

12 अगस्त 2019 को विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार, फ़ेनिक्स में श्रीमती सुषमा स्वराज की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। आरम्भ में पुण्यात्मा की शांति के लिए 2 मिनट का मौन धारण किया गया तथा उपस्थित सहृदयों एवं हिंदी प्रेमियों ने श्रीमती स्वराज के चित्र पर पुष्प अर्पण करते हुए उनको श्रद्धांजलि दी। तत्पश्चात् श्रीमती स्वराज की मॉरीशस यात्रा, 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में उनकी गरिमामयी उपस्थिति एवं सक्रिय भागीदारी और हिंदी के प्रति उनके भावोद्गार की कुछ झलकियाँ एक वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत की गईं।

इस अवसर पर शिक्षा व मानव संसाधन तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय के पूर्व वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी श्री रामप्रकाश रामलगन, भारतीय उपउच्चायुक्त श्री जनेश केन, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका आचार्य प्रतिष्ठा, विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य डॉ. उदय नारायण गंगू, महात्मा गांधी संस्थान परिषद् के अध्यक्ष श्री जयनारायण मीतू, महात्मा गांधी संस्थान में आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पांडेय, महात्मा गांधी संस्थान के भारतीय अध्ययन संकाय की अध्यक्षा डॉ. राजरानी गोबिन एवं हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. विनय गुदारी, मॉरीशस की सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के अधिकारी गण एवं सदस्य, हिंदी शिक्षक, प्राध्यापक तथा हिंदी प्रेमी उपस्थित थे।

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा कि *"विदेश मंत्री के रूप में दुनिया भर में लोगों से जुड़ी हुई समस्याओं का समाधान ढूँढने वाली, भावशून्यता को भावों से भर देने वाली, ऐसी नेत्री कहाँ मिलेगी? वे समाजवादी आन्दोलन से निकली हुई नेत्री थीं।"*

श्री जनेश केन ने श्रीमती स्वराज जी के साथ अपने अनुभवों और स्मृतियों को साझा किया। उन्होंने कहा *"लोग जाते हैं, लेकिन ऐसे थोड़े ही लोग होते हैं, जिनको इतने प्रेम और आदर के साथ याद किया जाता है। सुषमा जी ने हमें सिखाया है कि अपना काम अच्छी तरह से करो और एक अच्छा मनुष्य बनने की कोशिश कभी भी रुकनी नहीं चाहिए।"*

श्री रामप्रकाश रामलगन ने श्रीमती स्वराज जी के साथ अपनी पहली भेंट की स्मृतियाँ साझा कीं। उन्होंने कहा कि *"अगस्त 2017 में भारत में आयोजित विश्व हिंदी सचिवालय की कार्यकारिणी बैठक में श्रीमती स्वराज के साथ पहली भेंट हुई थी। सुषमा जी मृदु भाषी थीं और हमेशा लोगों को प्रोत्साहित करती थीं। वे हिंदी भाषा की रक्षक थीं। उनकी प्रेरणा से 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन की तैयारियों से संबंधित मैंने अपना प्रस्तुतीकरण हिंदी में दिया, भले ही तैयारी अंग्रेज़ी में हुई थी। इसके पश्चात् सम्मेलन की तैयारियों में श्रीमती स्वराज का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।"*

डॉ. गंगू ने भी श्रीमती स्वराज के साथ अपनी भेंट की स्मृतियाँ साझा कीं। अप्रैल 2018 में भारत में जब विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् की बैठक आयोजित हुई थी, तब उससे संबंधित एक घटना साझा करते हुए उन्होंने सुषमा जी के हिंदी प्रेम, समर्पण-भाव और भाषा के प्रति कटिबद्धता का प्रमाण रखा। डॉ. गंगू ने श्रद्धांजलि सभा में यह माँग की कि *"क्यों न प्रधान मंत्री से यह निवेदन किया जाए कि विश्व हिंदी सचिवालय सुषमा जी के नाम से हो। यह सचिवालय सुषमा जी का बालक है, अब प्रौढ़ हो रहा है, अत: नाम होना चाहिए "सुषमा स्वराज भवन - विश्व हिंदी सचिवालय।"* यह उनके प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति होगी।

आचार्य प्रतिष्ठा जी ने अपने संबोधन में कहा *"एक आदर्श भारतीय नारी का जीवंत उदाहरण थीं सुषमा जी, जितनी कठोर उतनी विनम्र। एक ओर वात्सल्य की प्रतिमूर्ति तो दूसरी ओर एक कुशल प्रशासक। भाषा व संस्कृति के प्रति उनका रुझान अनोखा था। मॉरीशस के प्रति उनका प्रेम अनूठा था।"*

श्री जयनारायण मीतू ने कहा कि सुषमा जी जब से भारत की विदेश मंत्री बनी थीं, तब से दो बार महात्मा गांधी संस्थान में उनका आगमन हुआ। नवम्बर 2014 में जब वे मॉरीशस सरकार द्वारा औपचारिक भेंट के लिए आमंत्रित थीं तब महात्मा गांधी संस्थान द्वारा आयोजित आप्रवासी सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुई थी। फिर 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान उन्होंने 19 अगस्त को महात्मा गांधी संस्थान में भारत सरकार द्वारा प्रायोजित पाणिनि भाषा प्रयोगशाला का उद्घाटन किया था। महात्मा गांधी संस्थान श्रीमती सुषमा स्वराज का नाम सदैव याद रखेगा।

डॉ. वेद रमण पांडेय ने सुषमा जी की याद में कहा *"सुषमा जी भारत में संपूर्ण क्रांति आन्दोलन के दौरान उपजी नेता थीं। सुषमा जी ने भारतीय जनता पार्टी से जुड़कर भारतीय जनता की सेवा का बीड़ा उठाया। श्री नरेंद्र मोदी की सरकार में विदेश मंत्री बनकर विश्व भर में फैली भारतीय जनता के हितों की सुरक्षा और उसका संरक्षण करना शुरू किया। सुषमा जी सत्ता में रहते हुए भी जनता के लिए थीं।"*

श्री प्रकाश बहादुर ने कहा *"2014 में सुषमा जी जब मॉरीशस आई थीं, तब ह्यूमन सर्विस ट्रस्ट में उनके लिए एक कार्यक्रम रखा गया था। उन्होंने अपने संबोधन से सभी का दिल जीत लिया था। और 2018 में जब वे विश्व हिंदी सम्मेलन के लिए मॉरीशस आई थीं, तब सभी संस्थाओं के अधिकारियों से मिली थीं। हिंदी को आगे बढ़ाने में सुषमा जी का बड़ा हाथ रहा है। हम उनको हमेशा याद रखेंगे।"*

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा, मुम्बई के महासचिव श्री राकेश मिश्र ने इस अवसर पर अपने व्यक्तिगत अनुभव बाँटे। उन्होंने कहा कि *"सुषमा जी के साथ उनको दो बार काम करने का मौका मिला। भारतीय नारी की वह प्रतीक थीं। उनके अन्दर मातृत्व भी था और दुर्गा भी थीं।"*

ओवर्सीज़ फ्रेंड्स ऑफ़ बी.जे.पी. की उपप्रधान श्रीमती निवेदिता नाथू ने कहा *"उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। देखने में बहुत साधारण-सी दिखती थीं, छोटे कद की महिला, लेकिन अपने टीका, सिन्दूर और साड़ी से उन्होंने पूरी दुनिया को भारतीय नारी की शक्ति की पहचान कराई। यू.एन. में हो या किसी भी देश में हो, वे उच्च कोटि की वक्ता थीं।"*

मंच-संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

श्रीमती सत्यवती सीता रामयाद

11 सितंबर 2019, को प्रसिद्ध हिंदी लेखिका एवं अध्यापिका श्रीमती सत्यवती सीता रामयाद का निधन हो गया। मॉरीशस के हिंदी समुदाय के बीच आप कवयित्री व अभिनेत्री के रूप में पहचानी जाती हैं। आप हिंदी अध्यापिका के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। मॉरीशस की हिंदी संस्थाओं से आप जुड़ी रहीं और हिंदी की सेवा करती रहीं। आप मॉरीशस इंटरनेशनल एसोसिएशन तथा वाक्का सांस्कृतिक सभा की अध्यक्षा, मॉरीशस एलायंस ऑफ़ विमेन की उपाध्यक्षा, मॉरीशस आर्य सभा की आजीवन सदस्या, हिंदी प्रचारिणी सभा, मानव सेवा निधि, हिंदी लेखक संघ, हिंदी संगठन एवं मॉरीशस हिंदी अकादमी की सदस्या तथा वाक्का सांस्कृतिक सभा, हिंदी पाठशाला की संचालिका रहीं। साथ ही आप अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में अपना योगदान देती रहीं। आप हिंदी भाषा की सेवा में हमेशा तैयार रहती थीं। बहु आंदोलन, पत्थर के लोर, सामूहिक प्रकाशन : A new approach to English literature, Inclusion of 'La roche qui pleure' with the title 'The legend of the wailing rock' आदि आपकी प्रकाशित रचनाएँ हैं। आपने अनेकानेक सम्मेलनों व कार्यशालाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया। आपको अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

संपादकीय

न बुझने वाली ज्योति!

भारत की पूर्व विदेश मंत्री और विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् की सहअध्यक्षा स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने हिंदी भाषा के प्रति अपनी श्रद्धा की ज्योति से अनगिनत लोगों के हृदय में हिंदी अनुराग की ज्योति जलाई। 6 अगस्त 2019 को उनके निधन का दुखद समाचार प्रसारित होते ही समय रुकता-सा प्रतीत हुआ और विश्व हिंदी समुदाय में गहरी शोक की लहर दौड़ पड़ी। विश्व स्तर पर हिंदी की सबल वकालत करने वाली हिंदी की श्रेष्ठ महिला वक्ता स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने यद्यपि प्रकृति के नियमों के अधीन होकर अपना नश्वर शरीर त्याग दिया, तथापि उनके द्वारा जलाई गई श्रद्धा की ज्योति से हिंदी जगत आज भी प्रकाशित है और आगे भी रहेगा।

बहुभाषाविद होने के कारण स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज आवश्यकतानुसार हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेज़ी आदि कई भाषाओं का प्रयोग करती थीं, पर हिंदी के प्रति अपनी प्रगाढ़ आत्मीयता के फलस्वरूप उन्होंने सितम्बर 2016 में संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में ही भाषण दिया। भारत के विदेश मंत्रालय का दायित्व सम्भालते हुए उन्होंने अपनी विविध योजनाओं में से विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय के निर्माण को विशेष महत्त्व दिया। उन्हीं के आशीर्वाद से अल्प समय में सचिवालय का भवन तैयार होकर परिचालित हुआ। भवन के उद्घाटन के तीन महीने बाद 3 जून 2018 को स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने विश्व हिंदी सचिवालय में भावपूर्वक पदार्पण किया और आगंतुक पुस्तिका में लिखा –

"विश्व हिंदी सचिवालय का भवन देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। यद्यपि इस भवन की कल्पना बीस वर्ष पहले की गयी थी, पर जब भवन निर्माण-कार्य प्रारम्भ हुआ, तब इसका निर्माण मात्र डेढ़ साल में हो गया है। ... अगस्त माह में होने वाले विश्व हिंदी सम्मेलन में इसका उपयोग कर सकेंगे, यह मेरे लिए बहुत संतोष का विषय है। विश्व हिंदी सचिवालय विश्व में हिंदी भाषा के संवर्धन का कार्य करने में सफल हो, इसके लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।"

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विश्व हिंदी सचिवालय की भूमिका स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने स्वयं निश्चित की और सम्मेलन के समापन के उपरान्त मॉरीशस से रवाना होने से पूर्व उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय में पुनः पदार्पण करके सचिवालय के ग्रंथालय एवं प्रलेखन केंद्र की नामपट्टिका का अनावरण और भारतीय प्रवासी नागरिक कार्ड का वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने अपने संदेश में हर्षपूर्वक कहा –

"ये दोनों चीज़ें मेरे लिए बहुत ही महत्त्व की थीं और अब बहुत ही संतोष के साथ मैं जहाज़ पकड़ सकूँगी, वापस दिल्ली जाने के लिए। दोनों काम जो अधूरे थे, वो पूरे हो गए।"

स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज विश्व हिंदी सचिवालय को अपने विकास के अगले पड़ाव तक पहुँचाने के लिए कटिबद्ध थीं। अगस्त 2017 और अप्रैल 2018 को उन्होंने क्रमिक रूप से भारत के विदेश मंत्रालय, दिल्ली में विश्व हिंदी सचिवालय की कार्यकारिणी बैठक और शासी परिषद् की बैठक का आयोजन करवाया। शासी परिषद् की बैठक में उन्होंने दृढ़तापूर्वक माँग की कि सचिवालय का हर कार्य हिंदी में ही हो और सारी रिपोर्ट हिंदी में लिखी जाएँ। हिंदी के प्रयोग की अद्भुत प्रेरणा देने वाली स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज की कमी विश्व हिंदी सचिवालय परिवार को बहुत खलेगी।

विश्व के अलग-अलग मंचों से स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने हिंदी के संरक्षण की चिंता व्यक्त की। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन-सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा -

"साहित्यकार बहुत उच्चकोटि के साहित्य की रचना कर रहे हैं। हमारे हिंदी के कवि गण बहुत उच्चकोटि की कविताएँ भी लिख रहे हैं। लेकिन अगर भाषा की समझ और बोलियत ही समाप्त हो जाएगी, तो इस साहित्य को पढ़ेगा कौन? इस कविता को गाएगा कौन? इस साहित्य को भावी पीढ़ियों को सौंपेगा कौन? इसलिए आज ज़रूरत है भाषा को बचाने की, जहाँ बची हुई है वहाँ भाषा को बढ़ाने की और एक और चिंता मैंने व्यक्त की, भाषा की शुद्धता को बरकरार रखने की।"

जब स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने भारतीय विदेश मंत्री के रूप में विश्व हिंदी सम्मेलनों का दायित्व संभाला तब पूर्व सम्मेलनों की अनुशंसाओं के अनुपालन पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया। उनके कुशल मार्गदर्शन में ही हर तीन महीने में अनुशंसा अनुपालन की बैठकें हुईं। पिछले दो विश्व हिंदी सम्मेलनों के केंद्रीय विषय में नवीनता लाकर उन्होंने अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया। 10 अप्रैल 2018 को 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के लोगो का लोकार्पण करते समय उनकी प्रसन्नता एवं उमंग दर्शनीय थी। सम्मेलन में उन्होंने विश्वासपूर्वक कहा –

"जब योग दिवस के लिए भारत 177 देशों का समर्थन हासिल कर सकता है तब हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए 129 देशों का समर्थन भी वह हासिल कर लेगा।"

यह भावोद्गार श्रोताओं के हृदय की गहराई तक पहुँचा और ऐसा आभास हुआ कि दुनिया भर की समस्याओं को सुलझाने में रत स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज हिंदी के संवेदनशील मुद्दों को भी सुलझाने में अवश्य सफल होंगी और संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी भाषा को मान्यता दिलाने का उनका लक्ष्य निश्चय ही पूर्ण होगा। इस लक्ष्य की पूर्ति में बाधा उत्पन्न करने वालों के प्रति वे प्रेम और विनम्रता से पेश आयीं, क्योंकि उन्हें कवि नीरज की निम्नांकित पंक्तियों पर अटल विश्वास था –

"निर्माण घृणा से नहीं, प्यार से होता है
सुख-शांति खड्ग पर नहीं, फूल पर चलते हैं
आदमी देह से नहीं, नेह से जीता है
बम्बों से नहीं, बोल से वज्र पिघलते हैं।"

नेह से जीने वाली और अपने बोल से सबको लुभाने वाली अनोखी महिला स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज निस्संदेह विश्व हिंदी समुदाय का प्यार समेटकर संसार से विदा हुईं। उनके देहावसान पर भारत के प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी ने अपने ट्वीट में लिखा –

"भारतीय राजनीति का एक महान अध्याय खत्म हुआ।"

विश्व हिंदी समुदाय की दृष्टि में स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज के निधन से हिंदी के वैश्विक उन्नयन के संघर्ष का एक सुनहरा अध्याय समाप्त हुआ।

मॉरीशस में स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज का आगमन देशवासियों के लिए अविस्मरणीय रहेगा। 2 नवंबर 2014 को मॉरीशस में भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों के आगमन की 180वीं वर्षगाँठ के समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज को देखने-सुनने के लिए आप्रवासी घाट में लोगों की भीड़ लग गयी थी। 03 जून 2018 को विश्व हिंदी सचिवालय में उनके आगमन पर सचिवालय का सभागार हिंदी प्रेमियों से खचाखच भर गया था। उनकी प्रेमपूर्ण दृष्टि, चेहरे की मीठी मुस्कुराहट, भावों की सौम्यता और वाणी की ओजस्विता भुलाई नहीं जातीं। उनके शब्द आज भी कानों में गूँजते हैं और उनके निर्देशों के अनुरूप आचरण करने की इच्छा तीव्र है।

भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता के रूप में, जहाँ राजनीति के क्षेत्र में स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज अपना लोहा मनवा गयीं, वहाँ हिंदी की कर्मभूमि पर भी उनका नेतृत्व स्तुत्य रहा। शायद जो समाजवादी आंदोलन से निकलता है, वह समाज का होकर ही रहता है, इसीलिए विश्व हिंदी समुदाय स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज को विस्मृत नहीं कर पाएगा। 7 अगस्त 2019 की शाम को दिल्ली के लोधी रोड शवदाह गृह में जब उनका अंतिम संस्कार संपन्न किया जा रहा था, तब विश्व हिंदी समुदाय का हृदय वेदना से विदीर्ण था। साथ ही भाषा-प्रेम की ज्योति जलाने वाली उस दिवंगत आत्मा के प्रति मन में गहरी श्रद्धा उमड़ रही थी।

12 अगस्त 2019 को विश्व हिंदी सचिवालय के सभागार में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में हर वक्ता ने स्वर्गीया श्रीमती सुषमा स्वराज के प्रेरक और करुणामयी व्यक्तित्व को नमन करते हुए उनके अनुपम हिंदी अनुराग का रेखांकन किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को प्रतिष्ठित करने के उनके स्वप्न को साकार करना आज विश्व हिंदी समुदाय का परम कर्तव्य है। मिट्टी से बने दीपक रूपी मानव शरीर भले ही आँखों से ओझल हो गया हो, पर उससे निकली ज्योति अभी भी मार्ग को आलोकित कर रही है और करती रहेगी।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव

प्रधान संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, सुश्री जयश्री सिबालक, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius

फ़ोन : +230 660 0800
इ-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक पृष्ठ : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/